सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 18/-
वार्षिक	₹ 200/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

जूलाई, 2016 वर्ष 15 अंक 05

सब को मिलाने आई ईद

आई ईद आई ईद
ढेरों ख़ुशियां लाई ईद
बच्चे बूढ़े सभी तो खुश हैं
देखो कैसी आई ईद
नहा के अच्छे कपड़े पहने
साफ़ सफ़ाई लाई ईद
इत्र लगाया अपने वतन का
घर घर खुशबू लाई ईद
खा के सिवैयां सब हैं निकलते
ईदगाह में लाई ईद
पढ़ के दो गाना सबसे मिलेंगे
सब को मिलाने आई ईद
नबी पे रहमत और सलाम
याद नबी की लाई ईद

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	03
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	05
ईद की खुशियाँ मनाने	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	06
दीने इस्लाम का मिज़ाज	ह0 मौ0सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0	09
ये आशयां किसी शाख़े चमन	मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी	12
मुसलमानों की ईद	ह0 मौ0सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	17
रमज़ानुल मुबारक के बाद	ह0 मौ0 सै0 मुहम्मद हमजा हसनी नदवी	19
इस्लामी मदरसों का सम्मान	इदारा	20
सफ़रे हज़ और सफ़रे आख़िरत	हाशमा अंसारी	21
लीबिया की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि	इदारा	26
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	29
भारत.....की जय	ई0 जावेद इक़बाल	33
मेरा तरीक अमीरी नहीं	खुर्रम मुराद	35
चील तेज़ निगाहों वाला	डॉ0 मुहम्मद अहमद	37
भारतीय संविधान की रक्षा	अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी	38
पहले अपनी इस्लाह की फिक्र	राशिदा नूरी	39
उर्दू सीखिए	इदारा	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

सूर-ए-आले इमरानः

अनुवाद- ऐ किताब वालो! तुम सत्य को असत्य के साथ क्यों गडमड कर देते हो और जानते बूझते सत्य को छिपाते हो[1](71) अहल–ए–किताब में से कुछ लोगों ने कहा कि ईमान वालों पर जो कुछ उतरा है उसको दिन के शुरु में मान लो और शाम को इन्कार कर देना शायद यह (मुसलमान भी अपने धर्म से) पलट जाएं[2](72) और मानना उसी की जो तुम्हारे धर्म पर चले आप कह दीजिए कि अस्ल बताया रास्ता तो अल्लाह ही का रास्ता है (और यह सब तुम इस ज़िद में कर रहे हो) कि तुम को जो कुछ मिला था वो किसी और को न मिल जाये या यह तुम पर तुम्हारे पालनहार के पास ग़ालिब न आ जाएं आप कह दीजिए कि सारा का सारा फज़्ल अल्लाह के हाथ में है जिसे चाहता है प्रदान कर देता है और अल्लाह तो बड़ी व्यापकता वाला और ख़ूब जानने वाला है[3](73) जिसे चाहता है अपनी कृपा के लिए चुन लेता है और अल्लाह बड़े फज़्ल वाला है(74) अहल–ए–किताब में कुछ वे हैं कि आप अगर उनके पास माल का ढेर धरोहर के रूप में रखा दें तो वे आप तक उसको पहुंचा देंगे[4](73) और कुछ वे हैं कि अगर आप एक दीनार भी उनके पास धरोहर (अमानत) रखा दें तो वे आप तक उसको पहुंचाने वाले नहीं सिवाए इसके कि आप उनके सिर पर ही खड़े रहें[5] इसलिए कि उन्होंने कह रखा है कि अनपढ़ लोगों के बारे में हमारी कोई पकड़ हनीं होगी और वे अल्लाह पर जानते बूझते झूठ बोलते हैं[6](75) (पकड़) क्यों नहीं (होगी हां) जो अपना इकरार पूरा करेगा और परहेज़गारी अपनाऐगा तो बेशक अल्लाह परहेज़गार लोगों को चाहता है(76) बेशक वे लोग जो अल्लाह से इक़रार का और क़समों का मामूली क़ीमतों में सौदा कर लेते हैं आख़िरत में उनके लिए कोई हिस्सा नहीं क़यामत में अल्लाह न उनसे बात करेगा और न उनकी ओर देखेगा और न उनको पाक करेगा और उनके लिए दुखद अज़ाब है[7](77) और उनमें कुछ वे भी हैं जो अपनी ज़बानों से किताब में तोड़ मरोड़ करते हैं[8] ताकि तुम उसको किताब ही का हिस्सा समझो जबकि वह किताब में से नहीं है और वे कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है जबकि वह अल्लाह की ओर से नहीं होता और वे अच्छी तरह जानते बूझते अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं(78) किसी इंसान से यह हो ही नहीं सकता कि अल्लाह ने उसको किताब और हिकमत व पैग़म्बरी दी हो फिर वह लोगों से कहता

फिरे कि अल्लाह वाले बन जाओ चूंकि तुम किताब की शिक्षा देते हो और जैसे तुम खुद उसको पढ़ते रहे हो(79) और न वह तुमसे यह कहेगा कि फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को पालनहार बना लो क्या वह तुम्हें मुसलमान होने के बाद कुफ़्र के लिए कहेगा[9](80) और जब अल्लाह ने पैग़म्बरों से यह वचन लिया कि अगर मैं तुम्हें किताब व हिकमत प्रदान करूं फिर तुम्हारे पास उस चीज़ को सच बताने वाला रसूल आ जाए जो तुम्हारे पास मौजूद है तो तुम ज़रूर उस पर ईमान लाना और ज़रूर उसकी सहायता करना (और) कहा तुम इक़रार करते हो इस पर मेरी ओर से ज़िम्मेदारी उठाते हो? वे बोले हम इक़रार करते हैं उसने कहा तो तुम गवाह रहना और मैं भी तुम्हारे साथ गवाहों में हूँ[10](81) फिर जो कोई इसके बाद भी मुंह मोडेगा वही लोग नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) हैं[11](82) तो क्या यह लोग अल्लाह के दीन के अलावा किसी और दीन की खोज में हैं जबकि उसी के हुक्म में है जो कोई आसमान और ज़मीन में है खुशी खुशी या बल पूर्वक और सब उसी की ओर लौटाए जाएंगे[12](83) ।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1.तौरेत के कुछ आदेश उन्होंने बिल्कुल छोड़ दिये थे, कुछ चीज़ें बढ़ा दी थीं और बहुत सी चीज़ें वे सामने छिपाते थे।

2. आसमानी किताब वाले ज्ञान वाले समझे जाते थे और अरबवासियों पर उनकी कुछ धाक बैठी हुई थी उन्होंने तय किया कि हम इस्लाम ज़ाहिर करके दोबारा यहूदी होने का ऐलान करें और कहें कि विचार विमर्श और तौरेत के अध्ययन के बाद इस धर्म की पुष्टि न हो सकी तो बहुत से मुसलमान भी उखड़ जाएंगे मगर उनकी यह मक्कारी चल न सकी।

3. उनकी सारी दुश्मनी इसलिए थी कि पैग़म्बर इस्राईल (याकूब) के वंश के बजाए इस्माईल के वंश में कैसे आ गया।

4. सब बराबर नहीं उनमें अच्छे अमानतदार (न्यायसंगत) लोग भी हैं यही लोग बाद में मुसलमान हुए।

5. यहूदियों की ज्ञानात्मक और धार्मिक चोरी के बाद धन की चोरी का उल्लेख है।

6. मक्कावासियों को वे बहुत गिरा हुआ समझते थे और उनको जाहिल कहते थे और उनका विचार यह था कि ग़ैर–यहूदी के साथ और विशेष रूप से मक्का वासियों के साथ हर प्रकार का व्यवहार वैद्य (जाएज़) है, यह यहूदी ग़ैर यहूदियों के साथ कुछ भी करें उस पर कोई पूछ–ताछ नहीं और आज भी यहूदियों के पवित्र ग्रंथों में यह सब कुछ मौजूद है।

7. अल्लाह ने यहूदियों से इक़रार लिया था और क़स्में ली थीं कि हर पैग़म्बर की मदद करना तुम्हारा कर्तव्य है मगर वे दुनिया के लिए इससे फिर गए, बार बार इस इक़रार को याद दिलाया जा रहा है।

शेष पृष्ठ .....11...पर...

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

रुकूअ़ और सज्दे की दुआऐं:-

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया रुकूअ़ में अपने रब की बड़ाई बयान करो और सज्दे में दुआऐं मांगो, यक़ीन है कि तुम्हारी दुआऐं कबूल हो जायें। (मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि सज्दे की हालत में बंदा अपने परवरदिगार से बहुत ही करीब होता है, पस सज्दे में दुआएं मांगा करो।

(मुस्लिम)

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि एक रात मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को न पाया तो तलाश करने लगी, अचानक क्या देखा कि आप रुकूअ़ या सज्दे में हैं और यह फरमा रहे हैं "सुब्हानक व बिहम्दिक ला इलाहा इल्ला अंतः और एक रिवायत में है कि मेरा हाथ आपके कदमों पर पड़ा आप सज्दे में थे आपके दोनों कदम खड़े हुए थे और आप यह दुआ पढ़ रहे थे। अनुवादः ऐ अल्लाह मैं तेरी रजामंदी के साथ तेरे गुस्से से पनाह मांगता हूं और तेरी आफियत के साथ तेरे अज़ाब से पनाह मांगता हूं और मैं तारीफ को गिन नहीं सकता, बस तू तो वैसा ही है जैसा तूने अपनी तारीफ की है। (मुस्लिम)

दिन में हज़ार नेकियाँ:-

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि0 से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर थे आपने फरमाया कि क्या कोई दिन में एक हज़ार नेकी कमाने से बेबस है एक आदमी ने कहा या रसूलुल्लाह भला दिन भर में एक हजार नेकी कौन कर सकता है आपने फरमाया "सुब्हानल्लाहि" सौ बार पढ़ लेने से एक हज़ार नेकियां हासिल हो जायेंगी या एक हज़ार गुनाह उससे मिटा दिये जायेंगे। (मुस्लिम)

बदन का सदक़ा:-

हज़रत अबू जर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हर सुब्ह को तुम्हारे हर जोड़ पर तुम्हारे लिए सदक़ा जरूरी है, सुब्हानल्लाहि सदका है, और अलहम्दुलिल्लाहि सदका है ला इलाहा इल्लल्लाहु सद्क़ा है, और अल्लाहु अकबर कहना सदका है और नेकी का हुक्म देना सद्क़ा है, बुराई से रोकना सद्क़ा है, और इन सबके बदले में चाश्त की सिर्फ दो रकअतें काफी हैं। (मुस्लिम)

अल्लाह का ज़िक्र न करने वाला मुर्दा है:-

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया

शेष पृष्ठ .....16...पर...

ईद की खुशियां मानाने पर एक वार्ता

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

नोटः इस लेख की वार्ता वास्तविक है परन्तु वार्ता कर्ताओं के नाम काल्पनिक हैं।

अहमद और संतोषी दो मित्र हैं, सह व्यवसायी हैं एक ही कार्यालय में दोनों ने काम किया और एक साथ अन्तिम अवकाश प्राप्त किया, दोनों पड़ोसी भी हैं। कभी कभी दोनो एक साथ बैठते हैं और खूब बनती है। कभी बेटों की नौकरी का विषय होता, कभी कभी सन्तान के रिश्तों का, तो कभी कारोबार का, कभी कभी धार्मिक परम्पराओं पर भी वार्तालाप होती, आज उन दोनों की ईद–बक़रईद और होली दीवाली की ख़ुशियां मनाने की वार्ता का उल्लेख किया जा रहा है। दोनों हैं तो ग्रामीण परन्तु उनकी सभ्यता लखनवी है, मिलते हैं तो आदाब अर्ज़ कहते हैं, आइये तशरीफ़ लाइये, तशरीफ़ रखिए, पधारिए जैसे शब्द बोलते हैं, कहते हैं चाय हाज़िर है नोश फरमाइये आदि।

संतोषी जी के बैठके में अहमद आए हैं चाय का दौर चल चुका है कुछ देर दोनों बातचीत करके मन बहलाएंगे।

संतोषीः भाई अहमद कल आपकी ईद है? तैयारियां तो हो चुकी होंगी?

अहमदः हाँ भाई संतोषी लड़कों ने सब तैयारियाँ कर लीं हैं मैं तो आपको कल दोपहर में सिवय्यां खाने की दावत देने आया हूं।

संतोषीः धन्यवाद, बहुत बहुत शुक्रिया अवश्य हाज़िर हूंगा, और मैंने तो आप लोगों की सामूहिक ईद की नमाज़ देखने का भी इरादा किया है।

अहमदः बहुत बेहतर, ईदगाह में बच्चों का ख़्याल करते हुए कुछ दुकानदार भी खाने पीने और खिलौने आदि की दुकानें लगाते हैं एक मेला सा हो जाता है ज़रूर आईये।

संतोषीः आप लोगों के खुशी मनाने का तरीक़ा मुझे बहुत भाता है।

अहमदः हां हमारे यहां खुशी मनाने में अल्लाह की प्रसन्नता का ध्यान रखा जाता है, नहाना धोना, दातून करना, अच्छे कपड़े पहनना, सुगन्ध लगाना ऐसे कार्य हैं जिनसे प्राकृतिक प्रसन्नता प्राप्त होती है, इस्लामिक शिक्षाओं में इनका आदेश भी है। इस प्रकार खुशी दोगुनी हो जाती है। नहाने धोने, अच्छे अच्छे कपड़े पहनने सुगन्ध लगाने की प्राकृतिक खुशी, फिर उस पर सवाब का वादा।

संतोषीः अहमद भाई यह बताइये कि सवाब क्या होता है?

अहमदः सवाब दो प्रकार का होता है, एक तो इसी संसार में उसको सुखी बनाने वाली वस्तुओं का प्रदान यह अस्थाई (आरज़ी) होता है और कभी यह नहीं भी मिलता है, दूसरा अगले जीवन में उसका बदला मिलता है, जहां मानवी आवश्यकताएं तथा चाहतें तो होंगी परन्तु उनके उत्पादन तथा प्राप्ति के साधन न होंगे, सवाब मिलने का अर्थ है उस जीवन में अल्लाह की ओर से मानवीय आवश्यकताओं तथा चाहतों, इच्छाओं की पूर्ति। पूर्ति भी

ऐसी भली और उत्तम जिसकी कल्पना सम्भव नहीं।

संतोषीः आपने बहुत अच्छे ढंग से सवाब को समझा दिया आपका बहुत बहुत शुक्रिया।

अहमदः इसी प्रकार मीठा खाने में मिठास का स्वाद की प्राकृतिक प्रसन्नता और मीठा खाने की सुन्नत पर सवाब की दोहरी खुशी मिलती है फिर एक समूह के साथ ईदगाह जाने, एक साथ खड़े होने एक साथ नतमस्तक होने आदि में जहां प्राकृतिक प्रसन्नता प्राप्त होती है वहीं भारी सवाब भी मिलता है नमाज़ पढ़ कर घर आए, ईद का कार्य समाप्त हुआ परन्तु एक दूसरे से मिलना मिलाना, मुबारकबाद देना, बधाई देना आदि तथा दोस्तों, मित्रों, सम्बन्धियों को दावतें खिलाना उनके यहां दावत खाना आदि की गुंजाइश है। और यह सब खुशी मनाने के साधन हैं। परन्तु गाना बजाना आदि से खुशी मनाना हमारे यहां वर्जित है कि इससे वास्तविक खुशी प्राप्त नहीं होती ध्वनि प्रदूषण होता है, मस्ती छाती है, फिर यह इस्लाम में मना भी है। और पाप भी है जिसके बदले में सजा मिलती है।

संतोषीः भाई अहमद जिस प्रकार आपने सवाब की व्याख्या की पाप के बदले की भी व्याख्या कीजिए।

अहमदः मेरे भाई आप मुझसे कम जानकार नहीं हैं परन्तु मेरे मुख से सुनना चाहते हैं तो सुनिए पाप का बदला भी दो प्रकार का है, एक सांसारिक कि इस संसार में जीवन को कुछ कष्ट पहुंचता है, दूसरे मरने के पश्चात अगले जीवन में ईश्वर की ओर से कष्ट पहुंचाया जाता है परन्तु जो व्यक्ति मरने से पहले अपने रब से अपने पापों की क्षमा चाह लेता है उसको उस पाप की सज़ा नहीं मिलती।

संतोषीः भाई अहमद आपकी बातों से मुझे संतोष प्राप्त हुआ, क्या आप हमारी होली दीवाली की खुशियों पर कुछ प्रकाश डालेंगे।

अहमदः मेरे भाई हम लोग तो ईद तथा बक़रईद की खुशियां ईश्वरी आदेश तथा अनुमति से मनाते हैं, मानव प्रकृति समारोह प्रिय होती है।

इस प्रकृति को पैदा करने वाले ने हमको वर्ष के दो दिन खुशी मनाने के दिये, ईदुल फ़ित्र जो रोज़ों जैसी लम्बी उपासना के समापन पर मनाई जाती है। दूसरी कुर्बानी की ईद जो हज़रत इब्राहीम की कुर्बानी की याद में अल्लाह के आदेश तथा अनुमति से मनाई जाती है, जहां तक मेरी जानकारी है आपकी होली दीवाली में मानव इच्छाओं का अधिक प्रभाव है ईश अनुमति या आदेश का अभाव है अतः इस पर आप प्रकाश डालें तो ज़ियादा अच्छी बात होगी।

संतोषीः भाई हम तो इतना जानते हैं कि भक्त प्रह्लाद के आग से बच जाने और होलिका के जल जाने की याद में होली मनाई जाती है, इसी प्रकार राम चन्द्र जी के लंका से विजयी हो कर अयोध्या वापस आने की खुशी में दीवाली मनाई जाती है परन्तु हम यह नहीं जानते अपितु 95 प्रतिशत हिन्दु यह नहीं बता सकते कि क्या इन दोनों त्योहारों के मनाने का वेदों में उपदेश है और क्या इन त्योहारों के मनाने की विधि बताई गई है, इसका ज्ञान याद है तो एक प्रतिशत पंडितों को है हर पंडित भी नहीं बता सकता, होली की खुशी में हम को इतना अच्छा लगता है कि अच्छे अच्छे पकवान बनते हैं, स्वादिष्ट भोजन

खाने को मिलता है, सम्बन्धी परस्पर बधाई देते हैं यह भी अच्छा लगता है, परन्तु परम्परा के अनुसार अगर नये कपड़े भी बनाये जाते हैं तो सस्ते मद्दे इसलिए कि कपड़े, होली के रंग तथा गुलाल से खराब हो जाते हैं अपितु रंग तथा गुलाल से तो कुछ लोगों की शक्लें ऐसी बदल जाती हैं कि पहचानने में कठिनाई होती है मुझे आश्चर्य है कि मनुष्य की सुन्दरता मिट्टी में मिला कर और उसको भूत सा बना कर प्रसन्नता प्राप्त करने की कैसी विधि है?

यहां तक फिर कुछ ठीक है हमारी समझ में नहीं आता कि लाखों टन लकड़ी फूंक देने में कौन सी खुशी प्राप्त होती है, आप होली जलाने की परम्परा मनाना ही चाहते हैं तो कुछ बेकार चीज़ें जला कर रस्म पूरी करलें, और अब तो कुछ सुधार हुआ है, परन्तु कहीं अब भी हो रहा है कि दीहात में लड़के तथा जवान गालियों के वाक्य जोर से बोल कर खुशी मनाते हैं और साफ़ कहते हैं कि बुरा न मानो होली है, उत्तर में औरतें नव युवकों पर गोबर तथा गंदा कीचड़ उछालती हैं हमने तो यह भी देखा है कि फ़ैज़ाबाद पैसेंजर लखनऊ पहुंच कर कीचड़ और रंग में सौंद जाती थी अब तो इसमें बहुत कुछ सुधार हुआ है मैं नहीं समझता इसमें यह खुशी के कार्य थे या दुख के फिर होली के अवसर पर बहुत बड़ी संख्या में लोग दारू पीते हैं और दारू के नशे में धुत्त हो कर समाज को जो अप्रसन्नता देते हैं वह किसी से ढकी छुपी नहीं, इसी प्रकार दीवाली में दिखाने की रौशनी के लिए करोड़ों का ईंधन जल जाता है मैं नहीं समझ पाता कि इससे क्या प्रसन्नता प्राप्त होती है, इसी प्रकार दीवाली के अवसर पर पटाखों पर जो धन बरबाद किया जाता है और उससे कितने लोग जल कर अपनी जानें गंवा देते या हास्पिटल में महीनों इलाज कराते हैं इससे कौन सी खुशी प्राप्त होती है? चाहिए कि रस्म पूरी करने को कुछ अधिक दीप जला दिये जाते या कुछ बल्बों से घर द्वार प्रकाशित करके खुशी प्रकट कर ली जाती अच्छा पकवान पका लिया जाता परन्तु दीवाली के अवसर पर जुआ खेलने, मदिरा पीने आदि से कौन सी खुशी लेते हैं। हमारी यह परम्पराएं सुधार चाहती हैं हमारे धर्म गुरूओं का कर्तव्य है कि इस ओर ध्यान दें।

अहमदः भाई संतोषी आप ने जिस प्रकार अपने त्योहारों की समीक्षा की वह अगर हमारे मुख से होती तो हिन्दू भाइयों को आपत्ति होती, आपको चाहिए कि इस विषय पर अपने धर्म गुरूओं, पंडितों से बात करें और उनको सुधार के कामों पर तैयार करें हम तो आपको दोहरी दावत दे रहे हैं एक तो ईदगाह आईये और हमारी सामूहिक उपासना देखिए, हमारी और बच्चों की खुशियों का दृष्य देखिए और उस खुशी में आप भी शरीक होइये, साथ ही मोहन की दुकान पर मेरी ओर से चाट तथा कुरकुरी जलेबियों का स्वाद लीजिए दूसरी दावत दोपहर एक बजे घर पर सिवय्यां तथा स्वादिष्ट नमकीन का मज़ा लीजिए।

संतोषीः मेरे मित्र! अवश्य आऊंगा और आपके घर मेरी पत्नी भी साथ आएगी।

अहमदः ज़रूर ज़रूर, मैं औरतों से कह दूंगा वह आपकी पत्नी का भव्य स्वागत करेंगी। ◆◇◆

दीने इस्लाम का मिज़ाज और उसकी नुमायां खुसूसियात

—हज़रत मौ0 सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0

—अनु0 मु0 हसन अंसारी

इसी ग़ैरत और नबवी फ़रीज़े की अदायेगी का असर है कि पैग़म्बर किसी शरई हुक्म में किसी तबदीली के न रवादार होते हैं और न किसी के दबाव और सिफ़ारिश की वजह से हुक्म शरई को मुलतवी करते हैं। वह अपने व बेगाने सब पर यकसां तौर पर अल्लाह के अहकाम का निफाज़ करते हैं। क़बीले बनी मख़ज़ूम की एक ख़ातून के बारे में जिसने चोरी की थी, उसामा बिन ज़ैद रज़ि0 सिफ़ारिश करने आपके पास आये तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ग़ज़बनाक हो कर फ़रमाया, "क्या अल्लाह के मुतय्यन कर्दा हुदूद के बारे में सिफ़ारिश करते हो?" फिर आपने तक़रीर में फ़रमाया, "ऐ लोगो! तुम से पहले उम्मतें इसलिए हलाक हुईं कि जब उनमें कोई असरदार आदमी चोरी करता तो उसको छोड़ देते और कोई कमज़ोर आदमी चोरी करता तो उसे सज़ा देते। क़सम है ख़ुदाये पाक की, अगर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटी फ़ात्मा रजियल्लाहु अन्हा भी चोरी करेगी तो मैं उसका हाथ काटने से दरेग़ न करूँगा।"

यह वह ग़ैरत है जो नबियों के नायबीन में मुन्तक़िल हुई। उन्होंने भी कामयाबी व नाकामी और नफ़ा—नुक़सान से आँखें बन्द करके कुर्आनी तालीमात और शरअी अहकाम की हिफ़ाज़त की। तारीख़ में इसकी शानदार मिसाल फ़ारूक़े आज़म रज़ि0 के काल में जबला इब्न अयहम ग़स्सानी का वाकिया है जो पाँच सौ लोगों के साथ मदीना आया। जब वह मदीना में दाख़िल हुआ तो कोई दोशीज़ा और पर्दा नशीन औरत ऐसी न थी जो उसको और उसके ज़र्क़ बर्क़ लिबास को देखने के लिए न निकल आई हो। जब हज़रत उमर रज़ि0 हज के लिए तशरीफ़ ले गये तो जबला भी साथ गया। वह बैतुल्लाह का तवाफ़ कर ही रहा था कि बनी फ़िज़ारा के एक शख़्स का पाँव उसके लटकते हुए तहबन्द की कोर पर पड़ गया और वह खुल गया। जबला ने हाथ से फ़िज़ारी की नाक पर ज़ोर से थप्पड़ मारा। फ़िज़ारी ने हज़रत उमर रज़ि0 के यहां नालिश की। अमीरुल मोमिनीन ने जबला को बुला भेजा। वह जब आया तो उससे पूछा कि तुमने यह क्या किया? उसने कहा, "हाँ, अमीरुल मोमिनीन इसने मेरा तहबन्द खोलना चाहा था, अगर काबा का एहतराम माने न होता तो मैं इसकी पेशानी पर तलवार का वार करता।" हज़रत उमर ने फ़रमाया, "तुमने इक़रार कर लिया। अब या तो तुम इस शख़्स को राज़ी कर लो वरना मैं क़िसास लूंगा।" जबला ने कहा कि आप मेरे साथ क्या करेंगे? हज़रत उमर ने फ़रमाया कि इससे कहूंगा कि तुम्हारी नाक पर वैसे ही थप्पड़ मारे

जैसे तुमने उसके नाक पर मारा। जबला ने हैरत के साथ कहा कि अमीरुल मोमिनीन। यह कैसे हो सकता है वह एक आम आदमी है और मैं अपने इलाक़े का ताजदार हूँ। हज़रत उमर रज़ि0 ने फरमाया कि इस्लाम ने तुमको और इसको बराबर कर दिया। अब सिवाय तक़वा के किसी चीज़ की बुन्याद पर तुम इससे अफ़ज़ल नहीं हो सकते। जबला ने कहा, "मैं समझता था कि इस्लाम कुबूल करके मैं जाहिलियत के मुक़ाबले में ज़ियादा बाइज़्ज़त हो जाऊँगा।" हज़रत उमर रज़ि0 ने फ़रमाया, "यह बातें छोड़ो। या तो इस शख़्स को राज़ी करो वरना क़िसास के लिए तैयार हो जाओ।" जबला ने जब हज़रत उमर रज़ि0 के यह तेवर देखे तो अर्ज़ किया कि मुझे आज रात ग़ौर करने का मौक़ा दिया जाय। हज़रत उमर रज़ि0 ने उसकी बात मान ली। रात के सन्नाटे और लोगों से छिप कर जबला अपने घोड़ों और ऊँटों को लेकर शाम की तरफ़ चला गया। सुबह मक्का में उसका पता निशान न था। एक ज़माने के बाद जब जसामा बिन मुसाहिक कनानी से जो उसके दरबार में शरीक हुए थे हज़रत उमर रज़ि0 ने उसकी शाहाना शान व शौकत के हालात सुने तो फ़रमाया, "वह महरूम रहा, आख़िरत के बदले में दुन्या ख़रीद ली। उसकी तिजारत खोटी रही।"

इसका यह मतलब नहीं है कि अंबियाकिराम दावत व तबलीग़ के सिलसिले में हिकमत से काम नहीं लेते। ऐसा नहीं है, अल्लाह तआला फ़रमाता है:—

तर्जुमा: *"और हमने कोई पैग़म्बर नहीं भेजा मगर वह अपनी क़ौम की ज़बान बोलता था कि उन्हें (ख़ुदा के अहकाम) खोल–खोल कर बता दे।" (सूरः इब्राहीम–4)*

ज़बान का मतलब यहां चन्द जुमलों और अलफ़ाज़ में महदूद नहीं वह उसलूब, तर्जे कलाम सब पर हावी है। इसका दिलकश नमूना हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की जेल में अपने दोनों साथियों से नसीहत, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के अपनी अपनी क़ौम और अपने अपने दौर के बादशाहों से मुकाब्ले में नज़र आता है। अल्लाह तआला का इरशाद है:—

तर्जुमा: *"ऐ पैग़म्बर! लोगों को दानिश और नेक नसीहत से अपने रब के रास्ते की तरफ़ बुलाओ और बहुत अच्छे तरीक़े से उनसे मुनाज़रा करो।" (सूरः नहल–125)*

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहाबा किराम को जब दावत व तबलीग़ की मुहिम पर रवाना फ़रमाते तो नरमी, शफ़क़त, सहूलत व आसानी पैदा करने और बशारत देने की हिदायत फ़रमाते। आपने हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि0 और हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि0 को यमन भेजते हुए हिदायत फ़रमाई।

"(*आसानी पैदा करना सख़्ती न करना, खुशख़बरी देना वहशत न पैदा करना*)" और खुद अल्लाह तआला ने आपको मुख़ातिब करते हुए फ़रमाया:—

तर्जुमाः *"ऐ मुहम्मद सल्ल0! ख़ुदा की मेहरबानी थी कि आपने उनके साथ नर्मी की और अगर आप क्रूर स्वभाव और सख़्त दिल होते तो यह तुम्हारे पास से भाग खड़े होते।*

(सूरः आल–ए–इमरान–159)

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने सहाबा किराम से फ़रमाया (तुम्हें आसानी पैदा करने के लिए उठाया गया है, दुश्वारी पैदा करने के लिए नहीं उठाया गया है)।

इस सिलसिले के बेशुमार दलायल हैं। सूरः इनाम में नबियों का नामों के साथ ज़िक्र करते हुए फ़रमाया गयाः–

तर्जुमाः *"यह वह लोग थे जिनको हमने किताब फ़ैसलाकुन राय क़ायम करने की सलाहियत और नबूवत अता फ़रमाई थी।" (सूरः इनाम–89)*

लेकिन इस "आसानी" का तअल्लुक तालीम व तरबियत और जुज़वी मसायल से था जिनका अक़ायद और दीन के बुन्यादी उसूलों से कोई तअल्लुक़ नहीं। जिन बातों का तअल्लुक़ अल्लाह के हुदूद से है उनमें हर दौर के अंबियाकिराम फ़ौलाद से ज़ियादा बे लचक और पहाड़ से ज़ियादा मज़बूत होते थे।

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा.....

8. "लवा" का अर्थ है मोड़ना यानी अपनी ज़बानों से अपनी चाहतों के अनुसार तौरेत में तोड़ मरोड़ करते रहते हैं।

9. नजरान के प्रतिनिधि मण्डल के सामने कुछ यहूदियों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा क्या तुम चाहते हो कि हम तुम्हारी पूजा करने लगें जैसे ईसाई ईसा अलैहिस्सलाम को पूजते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा अल्लाह की शरण चाहता हूं इस बात से कि हम अल्लाह को छोड़ कर किसी और की पूजा करें या दूसरों को इसका अमंत्रण दें इसके लिए अल्लाह ने हम को भेजा ही नहीं इस पर यह आयतें उतरीं।

10. हर पैग़म्बर से और पैग़म्बर के मध्य से हर पैग़म्बर ने अपने समुदाय को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आने की खबर दी।

11. पैगम्बर से तो मुंह मोड़ने का संदेह नहीं, यहां मतलब उनके अनुयायी हैं, बाइबिल में लिखा है "मूसा ने कहा खुदावन्द तुम्हारे भाईयों में से तुम्हारे लिए मुझ जैसा एक नबी पैदा करेगा जो कुछ वह तुमसे कहे वह सुनना और यूं होगा कि जो व्यक्ति उसकी न सुनेगा वह समुदाय में समाप्त कर दिया जाएगा बल्कि समोईल से लेकर पिछलों तक जितने पैग़म्बरों ने बात की उन सबने उन दिनों की ख़बर दी है"।

(न्यु टेस्टामेंट–अमाल–ए–रसुल खण्ड–3, अध्याय 22–23, मुद्रित लाहौर)।

12. खुदा के दीन यानी इस्लाम सब पैग़म्बरों का दीन यही रहा है "वलहुअसलम" में इसी की ओर इशारा है और इस सत्य का व्यख्यान भी कि यह धर्म सर्वथा "समर्पण" का नाम है।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

ये आशयां किसी शाख़े चमन पे बार न हो

—मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी

कहा जाता है कि इन्सान एक समाजी हैवान है यानी न वह तनहा सुखमय जीवन व्यतीत कर सकता है और न अपनी आवश्यकताएं पूरी कर सकता है वह न केवल बीबी बच्चों का ज़रूरतमंद होता है बल्कि उसको ख़ानदान और समाज की भी ज़रूरत होती है इसी ज़रूरत से आपसी संबंध वजूद में आते हैं, पड़ोसियों से संबंध, स्थानीय दुकानदारों से संबंध, जीवन के विभिन्न भागों से संबंधित लोगों से लाभ उठाना, यात्रा करते हुए यात्रा के साथियों का लिहाज़, गाड़ी चलातेहुए उन दूसरे लोगों का ख़याल जो हमारे साथ रवां दवां हैं डॉक्टर और मरीज़, दुकानदार और ग्राहक, मालिक और मज़दूर टीचर और स्टूडैंट, राजा और प्रजा, तात्पर्य यह कि जीवन के हर पल में इन्सान घर से लेकर बाहर तक एक दूसरे से संबंध रखने पर मजबूर हैं, जैसे बिजली का एक बल्ब रोशनी देने में क्रन्ट का मोहताज़ है, उसी प्रकार इन्सान अपनी नाना प्रकार की ज़रूरतों को पूरा करने में बहुत से इन्सानों, जानवरों, मशीनों और भौतिक साधनों का ज़रूरत मंद है।

अब अगर वह उस ज़रूरत को भलीभांति पूरा करना चाहता है तो उसके लिए ज़रूरी है कि जैसे वह चाहता है कि उसका ख़याल और लिहाज़ रखा जाये, उसी तरह वह दूसरों का भी ख़याल और लिहाज़ रखे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसके लिए बड़ी अर्थपूर्वक शिक्षा दी है कि "मुसलमान होने का तक़ाज़ा यह है कि इन्सान अपने लिए जिस चीज़ को पसन्द करता है अपने भाई के लिए भी वही पसन्द करे" इसका मतलब यह है कि उसका भाई जिस कैफ़ियत से दो चार है अगर वह खुद होता तो अपने साथ किस क़िस्म के सुलूक का ख़्वाहिशमन्द होता, वही सुलूक (व्यवहार) करने की कोशिश की जाये, आप बस में बैठे हुए हों, हालांकि नौजवान और सेहतमंद हैं, अगर एक बुजुर्ग खड़े हुए हैं, शरीर दुबला, हाथों में थरथराहट, और डन्डा, कमर झुकी हुई, पैरों में लड़खड़ाहट ग़ौर करें कि अगर आप उनकी जगह होते तो क्या चाहते? यही कि कोई नौजवान उठ कर आपको अपनी जगह बिठा दे, ऐसे वक़्त में अगर आप खड़े हो जायें और अपनी जगह पर उन बुजुर्ग को बिठा दें तो आपको उनसे बग़ैर किसी ख़वाहिश और तलब के ढेर सारी दुआएं मिलेंगी और आपका अमल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उस हिदायत (आदेश) पर होगा कि "जो अपने लिए पसन्द करते हो, वही दूसरों के लिए पसन्द करो"।

ट्रेन की यात्रा में ऐसा अवसर आता है कि आपको नीचे की बर्थ मिल गई और किसी महिला के हिस्से में ऊपर की बर्थ है उसके लिए स्वयं ही ऊपर चढ़ना दुशवार है और अगर उसके छोटे बच्चे भी हों, तो फिर यह काम और दुशवार हो जाता है, यदि उस समय आपकी फ़ैमली और बच्चे होते तो अवश्य चाहते कि आप उनके लिए नीचे की बर्थ का प्रबंध करें, अब अगर आप यहां थोड़ी सी तकलीफ़ को बरदाश्त करलें और अपनी इस इन्सानी बहन के हवाले अपना बर्थ कर दें तो सोचिए कि उसके दिल में किस क़दर कृतज्ञता की भावना उत्पन्न होगी।

यात्रा में हों या घर पर हों कितने ही अवसर आते हैं जब ऐसी सहायता की आवश्यकता होती है, यह व्यवहार इन्सान को लोगों की निगाह में प्रिय बना देता है, और जो लोगों के बीच प्रिय होता है उसको अल्लाह तआ़ला की महब्बत हासिल होती है, हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि0 से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह आदेश नक़ल किया गया है कि "अल्लाह तआ़ला के नज़दीक तुममें से ज़ियादा महबूब वह व्यक्ति है जो लोगों में सबसे ज़ियादा महबूब होगा और अल्लाह तआला के नज़दीक सबसे ज़ियादा क्रोध का भागी तथा अप्रिय वह व्यक्ति है जो लोगों की नज़र में अप्रिय हो"।

एक और हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उपदेश बयान हुआ है कि "ईमान वाले का मिज़ाज यह होता है कि वह स्वयं महब्बत करता है और इस योग्य होता है कि उससे महब्बत की जाये और उस व्यक्ति में ख़ैर (भलाई) नहीं है जो ना स्वयं महब्बत करता हो और न उससे महब्बत की जाती हो"।

इसीलिए रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अच्छे अख़लाक की ताकीद (आग्रह) किया है, फरमाया क़ियामत के दिन तुममे से वह शख़्स मुझसे क़रीब होगा, जिसके अख़लाक़ अच्छे होंगे, और वह मुझ से सबसे दूर होगा जिसके अख़लाक़ बुरे होंगे।

यह तो अख़लाक़ का एक पहलू है कि दूसरों के काम आया जाये, अपने आप पर दूसरों को तरज़ीह (प्रमुखता) दी जाये, स्वयं नुक़सान उठा कर दूसरों को फ़ायदा पहुंचाया जाये, और स्वयं कष्ट उठा कर दूसरों के लिए राहत और आराम पहुंचाने के अवसर दिये जायें यह नैतिक आदेश किसी समय अनिवार्य होते हैं किसी समय उचित, अख़लाक़ का दूसरा पहलू यह है कि आप इस बात का ख़याल रखें कि आपके किसी अमल से दूसरों को नुक़सान न पहुंच जाये, यह शरई तरीक़े से वाजिब (अनिवार्य) है, कुरआन व हदीस में इन नैतिक बातों का इस विस्तार के साथ वर्णन किया गया है कि इबादात के अतिरिक्त जीवन के किसी अन्य भाग में इतना विवरण नहीं मिलता, अतएव नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी ऐसे अमल को नहीं पसन्द फ़रमाया जिससे किसी जानवर को तकलीफ़ हो,

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जानवर के चेहरे पर मारने और उसको बुरा भला कहने की भी मुमानियत फ़रमाई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस बात से भी मना फरमाया कि एक जानवर पर तीन आदमी सवार हों, इसमें इस बात की ओर इशारा होगया कि सवारी चाहे जानवर के रूप में हो या किसी मशीन के रूप में हो, उसकी शक्ति और क्षमता के लिहाज़ से ही बैठना है अगर इसकी रिआयत न की गई तो दुर्घटना हो सकती है और स्वयं नुक़सान पहुंच सकता है, और सड़क पर दूसरे चलने वालों के लिए भी कष्ट दायक है। यह अमल न क़ानूनन उचित है और न शरअन उचित है। आज अगर हम अपने व्यवहारिक जीवन में देखें तो कितने ऐसे काम करते हैं जो दूसरों के लिए कष्टदायक हैं हालांकि हम उसे अपनी होशियारी और चालाकी समझते हैं मसलन बहुत से लोग अपने घरों का पानी नालियों से सड़क पर निकालते हैं जिससे आने जाने वालों के लिए परेशानी होती है, दुर्गन्ध फैलती है, कपड़े ख़राब होते हैं, लेकिन हमें इसकी बिलकुल पर्वाह नहीं, क़ानून के अनुकूल तो हमें घर बानाते समय अपनी ज़मीन का कुछ भाग छोड़ना चाहिए, लेकिन हमारा हाल यह है कि ज़मीन का कुछ भाग तो दूर की बात, हम सड़क के हिस्से में सीढ़ियां, चबूतरे और छज्जे बना लेते हैं, ज़रा भी नहीं सोचते कि यदि इस प्रकार हमने कोई ज़मीन ग़लत तरीक़े पर अपने काम में ले ली तो हमने एक व्यक्ति को तकलीफ़ नहीं पहुंचाई बल्कि हज़ारों लोगों को तकलीफ़ में डाल दिया और उनका हक़ मारा, इस प्रकार सामूहिक तौर पर ज़मीन हड़प करने का गुनहगार होंगे।

मुहल्लों में यह बात आम है कि अपने घरो का कचरा रास्ते में किसी के घर के सामने डाल दिया इसी तरह आम मिज़ाज यह है कि रास्ते में गाड़ियां खड़ी कर दें, जहां पार्किंग नहीं वहां गाड़ी खड़ी कर दी, इसकी वजह से ट्राफिक जाम होता है, कितने ही ज़रूरतमंद लोग वक़्त पर अपनी मंज़िल नहीं पहुंचपाते मिन्टों का सफ़र तै करने में घण्टों लग जाते हैं, फ़लाईटें, ट्रेनें और बसें छूट जाती हैं, इसके नतीजे में टिकट बेकार हो जाता है, मरीज़ वक़्त पर अस्पताल नहीं पहुंच पाता यहां तक कि एम्बोलेंस को भी लोग रास्ता देने को तैयार नहीं होते, कितनी ऐसी घटनाएं हुई कि अस्पताल पहुंचने से पहले मरीज़ की मौत हो गई, देखने में यह छोटा सा अमल मालूम होता है लेकिन हज़ारों लोग इससे प्रभावित होते हैं और कष्ट उठाते हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसा अमल करने से सख़्ती से रोका जो दूसरों के लिए कष्ट का कारण बने, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रास्ते से तकलीफ़ देने वाली चीज़ को हटाना और गन्दगी का रास्ते से दूर करना भी सद्क़ा फ़रमाया, रास्ते पर पेशाब पाख़ाना करना कचरा फेंकना, शरीर

को कष्ट देने वाली चीज़ों को रास्ते पर डाल देना, रास्ते के कुछ भाग को अपने प्रयोग के लिए खास कर लेना, गाड़ी इस तरह खड़ी करना कि रास्ता जाम हो जाये आदि इसीलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रास्ते पर बैठने से भी मना फ़रमाया, गोया यात्रियों, पड़ोसियों और मुहल्ले के लोगों को तकलीफ़ से बचाना भी ईमान में दाख़िल है।

केवल रास्ते की रुकावट पर ही निर्भर नहीं, कोई भी ऐसा काम जिससे किसी की हक़तलफ़ी हो या जो किसी के लिए तकलीफ़ या ख़ौफ़ और दहशत का सबब बने, वह सब इस मुमानियत में शामिल है, इसी प्रकार अनुचित जगह थूक और बलग़म फेकना, अल्लाह के रसूल ने फ़रमाया यदि कोई व्यक्ति बलग़म थूके तो उसे ज़मीन में दफ़न करदे अथवा ऐसा कुछ करे कि किसी के कपड़े और शरीर में न लगे, आमतौर पर लोग दाईं ओर से चला करते थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि दाईं ओर न थूको, यदि बाईं ओर लोग हों तो अपने सामने नीचे थूका करो सार्वजनिक अधिकार छीनने का एक तरीक़ा यह भी है ट्रेनों या बसों में दूसरे की सीट पर बिना आज्ञा आप बैठ जायें या जो कोच या जो सीटें महिलाओं या रोगियों के लिए विशेष हों उन पर अन्य लोग कबज़ा जमालें, ऐसा तो बहुत होता है कि सरकार की ओर से सार्वजनिक जगहों पर मअ़जूरों के लिए लेटरिन बनवाये गये, उनमें अच्छे ख़ासे स्वस्थ्य हृष्ट पुष्ट लोग चले जाते हैं और बेचारे बूढ़े और मअ़जूर लोग इन्तिज़ार में खड़े रहते हैं। रेलवे प्लेटफार्म और ट्रेन की जनरल बोगियों में बिंच और सीट लोगों के बैठने के लिए होती है लेकिन कुछ लोग ऐसी बेफ़िकरी के साथ सो जाते हैं मानो उन्होंने उनका रिजर्वेशन करा रखा हो।

तकलीफ पहुंचाने की एक सूरत आबादी वाले इलाक़ों में ग़ैर कानूनी तौर पर औद्योगिक कारख़ानों की स्थापना जहां से गन्दा पानी और धुवां निकलता है जो कष्टदायक भी और हानिकारक भी, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस बात से भी मना फ़रमाया कि रात को सोते समय चराग जलता हुआ छोड़ दिया जाये, इस मुमानियत में कई हिकमतें हैं, एक तो यह बिला ज़रूरत चराग़ जलाने में ईंधन की बरबादी है और ईंधन अल्लाह तआला की बड़ी नेमत है, दूसरे इससे निकलने वाला धुवां इन्सान के लिए हानिकारक है, तीसरे इससे आग लगने का ख़तरा है, इसी आदेश में ऐसी गाड़ियां हैं जिनमें रद्दी ईंधन प्रयोग किया जाये और उसकी वजह से बड़ी मात्रा में धुवां निकल कर वातावरण को दूषित करे और स्वास्थ्य को हानि पहुंचाये।

गाड़ियों में हार्न, चलने वालों को सावधान करने के लिए होता है, लेकिन आजकल कुछ लोग कुत्ते या किसी जानवर की

अवाज़ या छोटे बच्चे की आवाज़ का हार्न इस्तेमाल करते हैं। ऐसा भी होता है कि दो पहियों वाली गाड़ी में ट्रक और लारी का हार्न लगा दिया। इस प्रकार की आवाज़ें चलने वालों में घबराहट और बेचैनी पैदा कर देती हैं और कभी कभी इन्सान संतुलन खो बैठता है।

कहने में यह छोटी– छोटी बातें हैं लेकिन वास्तविकता यह है कि इससे हमारे मिज़ाज और सोच की झलक मिलती है जो व्यक्ति मोमिनाना अख़लाक़ रखता हो, जिसके दिल में इन्सानियत की महब्बत और दूसरे इन्सानों का लिहाज़ हो वह हर ऐसी बात से बचता है जो दूसरों के लिए कष्ट और परेशानी का कारण बने। जिगर मुरादाबादी के कथनानुसार–

तमाम उम्र ऐसी एहतियात में गुज़री
यह आशयां किसी शाख़े चमन पे बार न हो।।

समस्त जीवन काल इसी सावधानी के साथ व्यतीत किया कि किसी पर बोझ न बनूं और किसी को कष्ट न दूँ।

❖❖

प्यारे नबी की प्यारी ....

अल्लाह का ज़िक्र करने वालों और न करने वालों की मिसाल जिंदा और मुर्दे की तरह है। (बुखारी)

ज़मीन के कीड़े मकोड़ों से हिफाजत की दुआः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि एक आदमी हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ और अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बिच्छू ने मुझे आज रात को डस लिया उससे मुझे आखरी दर्जे की तकलीफ पहुंची, आपने फरमाया अगर यह कलिमात रात को कह लेते "अऊजुबिकलिमातिल्लाहि तताम्माति मिन शर्रि म खलक़" तो तुम इस मुसीबत से जरूर महफूज़ रहते। (मुस्लिम)

दूसरे के लिए दुआ अपने लिए दुआ हैः–

हज़रत अबू दर्दा रज़ि0 से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते सुना है जो मुसलमान बंदा अपने मुसलमान भाई की गैर मौजूदगी में उसके लिए दुआ करता है तो फरिशता कहता है कि तुझको भी यही भलाई मिले जो तू उसके लिए मांग रहा है। (मुस्लिम)

दुआ कबूल होने का सबबः–

हज़रत अबू दर्दा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हर मुसलमान बन्दे की दुआ कबूल होती है जो अपने मुसलमान भाई के लिए उसके पीठ पीछे दुआ करता है, एक फरिशता इस ड्यूटी पर रहता है जब वह अपने भाई की गैर मौजूदगी में कोई दुआ करता है तो वह फरिशता आमीन कहता है और कहता है कि यही भलाई इसको भी अता कर।

(मुस्लिम शरीफ)

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

अनुरोध

अगर आपको "सच्चा राही" की सेवाएं पसन्द हों तो आप से अनुरोध है कि "सच्चा राही" के नये ग्राहक बनाने का प्रयास करें, अल्लाह आपको अज्र देगा और हम आपके आभारी होंगे।

(संपादक)

मुसलमानों की ईद शैतान का रोजा

—हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी

मुसलमानों को इस्लाम ने दो ईदें प्रदान की हैं, एक ईदुल फित्र (रमजान के बाद की ईद) दूसरी ईदुल अजहा (कुर्बानी की ईद) हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना हिजरत के बाद वहां के त्यौहारों को देख कर, अल्लाह के हुक्म से मुसलमानों को यह दोनों त्यौहार मनाने का आदेश दिया था। उसी वक्त से यह दोनों त्यौहार दुन्या के मुसलमान जहां भी हैं और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीके को अपनाये हुए हैं खुशी के तौर पर मनाते हैं। दुन्या के तमाम मुल्कों और क़ौमों में अपने हालात और विशेषताओं के लिहाज से त्यौहार मनाये जाते हैं, हर क़ौम के त्यौहार में उस क़ौम की किसी घटना या खेती बाड़ी से संबंधित कोई संबन्ध होता है और इस प्रकार हर क़ौम का त्यौहार अपनी धार्मिक तथा सांस्कृतिक बातों का सूचक होता है, जिसमें उस कौम की धार्मिक कल्पनाओं की झलक मिलती है, इसी कारण त्यौहार एक ऐसा अवसर होता है कि उसमें उस कौम के सभी जन, भाग लेते हैं और इस प्रकार अपनी उन धार्मिक कल्पनाओं से संबंधित होने का प्रमाण देते हैं।

मुसलमानों में ईदुल फित्र और ईदुल अजहा इन की सम्मिलित दीनी तथा मिल्ली कल्पनाओं का सूचक हैं, मुसलमानों की सम्मिलित कल्पनायें एक पालनहार की बन्दगी और उसके आज्ञा पालन से संबन्धित हैं, उस बन्दगी और आज्ञा पालन के आभास को मुसलमानों की प्रसन्नता तथा प्रफुल्लता से जोड़ दिया गया है, अतएव यह दोनों ईदें एक साथ अल्लाह की उपासना तथा प्रसन्नता और प्रफुल्लता का अवसर हैं। ईदुल फित्र रमजान के रोज़ों के समापन पर आती है और ईदुल अजहा अल्लाह के लिए भेंट (कुर्बानी) प्रस्तुत करने के रूप में आती है, इस प्रकार ईद के दोनों दिन अल्लाह के आज्ञा पालन तथा उसके लिए अपनी आदर्श कर्तव्य प्रायणता (मिसाली कारकरदगी) के समापन पर प्रसन्नता के दिन होते हैं।

इस्लाम ने मुसलमानों को दीन और दुन्या को एक साथ चलाने की शिक्षा दी है, वह दुन्यावी मांगें जो मानवीय प्रकृति का परिणाम हैं उनको पूरा करने का अल्लाह की तरफ से अनुमति ही नहीं अपितु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा उनको पूरा करने का आदेश है अतः यदि कोई मुसलमान उन सांसारिक मांगों को अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आज्ञा पालन में पूरा करेगा तो उसकी गिन्ती उपासना में होगी और उस पर सवाब मिलेगा। इस प्रकार एक मुसलमान को खुशी मनाने की इजाजत के सबब खुशी मनाने पर भी

सवाब मिलता है, अतएव ईदुल फित्र हो या ईदुल अजहा उनमें अच्छे कपड़े पहनना और खुशबु लगाना तथा प्रसन्नता व्यक्त करना भी इबादत है और सवाब का काम है जब कि मुसलमान यह समझ कर करे कि इसका अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से आदेश है। इसको कहते हैं "हम खुर्मा व हम सवाब" (खजूर खाना और सवाब भी पाना) कि एक ओर तो अच्छे कपड़े पहनना सुगन्ध लगाना अच्छा खाना खाना एक दूसरे से खुशी से मिलना जुलूस की शक्ल में एक साथ ईदगाह जाना, ईद की नमाज़ पढ़ना और वापस आना और एक दूसरे को मुबारकबाद देना, मिलना मिलाना तथा स्वादिष्ट खाना खाने–खिलाने जैसे काम होते हैं वहीं दूसरी ओर शरीअत के अनुकूल नहाना धोना, पवित्रता तथा स्वच्छता प्राप्त करना दुवाओं के साथ ईदगाह जाना दो रकअत नमाज़ पढ़ना, खुतबा सुनना, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर रास्ते में पुकारना तथा जपना और अपने परवरदिगार (पालनहार) का शुक्र बजा लाना मिलता है।

ईदुल फित्र अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने के तौर पर मनाई जाती है कि अल्लाह तआला ने जो रमज़ान के रोज़े फर्ज किये थे वह उसकी तौफीक से पूरे हो गये।

एक माह तक जो रोजे रखे हैं उसका सवाब आखिरत में मिलेगा, इस दुन्या में भी प्रसन्न होने तथा प्रसन्नता मनाने का अवसर दिया गया है, रहे वह लोग जिन्होंने किसी उचित कारण के बिना रोजे छोड़े आज ईद के दिन वह शर्मिन्दा हैं उनको शर्मिन्दा होना चाहिए भी और अल्लाह तआला से मुआफी मांगते हुए अल्लाह तआला की इस देन पर शुक्रिया अदा करते हुए अपने भाईयों के साथ ईद की खुशी में शरीक होना चाहिए और अल्लाह तआला से अहद करना चाहिए कि वह छूटे हुए रोजे रख लेंगे और इस अहद को जल्द पूरा करना चाहिए।

ईद का दिन अल्लाह तआला की तरफ से मुसलमानों के लिए खुशी मनाने और खाने पीने का दिन है, रोजा रखना यद्यपि बड़ी अच्छी बात है परन्तु ईद के दिन रोजा रखना हराम (वर्जित) है, बड़ा पाप है। हदीस शरीफ में आया है कि ईद के दिन शैतान रोजा रखता है, शैतान अल्लाह की इताअत (आज्ञा पालन) में रोजा नहीं रखता अपितु वह इस दुख में खाना पीना छोड़ देता है कि अल्लाह की इताअत करने वालों ने महीना भर रोजे रखे दिन में अपनी वैध इच्छाओं पर भी नियन्त्रण रखा और आज अल्लाह के हुक्म से खुशियां मना रहे हैं शैतान यह देख कर बड़ा दुखी है और अपना खाना पीना छोड़े है जैसे रोजे से हो।

रमजान के रोजे रखना बड़ी उच्य उपासना है इसको इस बात से समझा जा सकता है कि अल्लाह तआला ने सूचित किया कि हर उपासना का प्रतिफल (सवाब) वैसे मिलेगा जैसे नियुक्त

शेष पृष्ठ .....25...पर...

रमज़ानुल मुबारक के बाद

—हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद हमजा हसनी नदवी

अल्लाह तआला ने रमजान का मुबारक महीना प्रदान किया रोजा रखने की तौफीक दी रमजान के अन्तिम अशरे (दहे) की शुभरात "लैलतुल कद्र" में इबादत की तौफीक दी, अल्लाह तआला जो गफूर है, गफ्फार है, रहीम है, रहमान है, उस से हर मुसलमान मर्द तथा औरत को आशा है कि वह अपने रोजेदार तथा रमजान का सम्मान करने वाले बन्दों को क्षमा करके जहन्नम की आग से अवश्य बचा लेगा और उनके लिए उन तमाम पुरस्कारों का फैसला कर दिया होगा जिन का उसने वादा किया है।

अब रमजान के बाद भी अल्लाह तआला के जिक्र को जारी रखना, उसके पवित्र कुर्आन का प्रति दिन पाठ करना पापों से बचना, भले कामों में भाग लेना, नमाज़ों की पाबन्दी करना अगर व्यापारी हो तो ईमानदारी से अपने फराइज अंजाम देना और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक एक सुन्नत को अपनाये रहना यह वह काम हैं जिन को अगर हम रमजान के बाद भी अपनाये रहेंगे तो हमारी दुन्या भी बनेगी और आखिरत (अगले जीवन) में भी सफलता मिलेगी। ◆◇◆

मां–बाप के साथ सद्व्यवहार

अल्लह तआला अपने प्यारे नबी को मुख़ातब करते हुए तमाम ईमान वालों से कहता है कि ऐ लोगो तुम्हारा रब आदेश देता है कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की उपासना मत करो और अपने मां–बाप के साथ सद्व्यवहार करो, वह दोनों बूढ़े हो जाएं और उनमें से कोई एक या दोनों तुम को बुढ़ापे में मिलें तो उनकी ख़ूब सेवा करो उनकी सेवा करने में तुम्हारे मुख से कभी "उफ़" न निकले, उन पर तुम्हें कभी गुस्सा न आये, तुम कभी भी उनको गुस्से से झिड़को नहीं और उनसे जब भी बात करो नर्मी से बात करो, अदब से बात करो और उनके सामने अपने को झुकाए रखो अर्थात उनके सामने सदैव नम्रता प्रकट करो तथा दया और आदर का भाव ज़ाहिर करो, उनके लिए दुआ करो कि ऐ अल्लाह जिस तरह इन दोनों ने बचपन में प्यार व महब्बत से मुझ को पाला पोसा है इनके बुढ़ापे में तू इन पर दया व कृपा कर। (सूरः बनी इस्राईलः 23–24) दूसरी जगह अल्लाह तआला फरमाते हैं कि "और हमने मनुष्य को उसके अपने माँ–बाप के विषय में ताकीद की है, उसकी माँ ने निढाल पर निढाल हो कर उसे पेट में रखा और दो वर्ष उसको दूध छोड़ने में लगे, कि "मेरे प्रति कृतज्ञ हो और अपने माँ–बाप के प्रति भी। अन्ततः मेरी ही ओर आना है।" (सूरः लुकमानः 14) ◆◇◆

इस्लामी मदरसों का सम्मान करें तथा अमौलिक बातों में उदारता अपनाएं

(एक तकरीर से ग्रहीत) —हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

दो बातें मैं मुख्यतः आपके सामने रख रहा हूं एक तो हमारे दीनी मदरसों के बाकी रहने की बहुत ज़रूरत है, इन मदरसों को खत्म करने की कोशिशें बहुत ज़ोरों से चल रही हैं, इस बात को सब लोग नहीं जानते, जो लोग परिस्थितयों से अवगत हैं वही जानते हैं और दीनी मदरसों को मिटाने की इस चालाकी के साथ कोशिश की जा रही है कि उसका पता उस समय चलेगा जब मदरसे न होंगे उस समय हाथ मलते रहने के सिवा और कुछ न हो सकेगा, अतः हमको सावधान होना चाहिए तथा इन मदरसों को भरपूर सहयोग देना चाहिए और उनको सुदृढ़ करना चाहिए जब तक यह मदरसे काम करते रहेंगे इस देश में इस्लाम अवशिष्ट (बाकी) रहेगा और अगर (अल्लाह न चाहे) मदरसों को बाकी रखने में हमारी कोशिश न रही और हम अचेत (गाफिल) रहे तो यहां से इस्लाम उसी प्रकार चला जायेगा अर्थात समाप्त हो जायेगा जिस प्रकार स्पेन से खत्म हुआ, यद्यपि वहां मुसलमानों ने लगभग आठ सौ वर्षों तक शासन चलाया लेकिन अन्ततः शासन बचा न सके तथा इस्लामी शासन के साथ वहां मुसलमान भी समाप्त हो गये।

उस समय स्पेन को जिन बातों की आवश्यता थी वहां के मुस्लिम नेताओं ने उस ओर ध्यान नहीं दिया उनके अलग अलग शासन स्थापित हो गये और पूरा स्पेन टुकड़ों टुकड़ों में बंट गया, फिर जब ईसाई आंधी आई तो कोई शक्ति उसको रोक न सकी, इसलिए कि छोटे–छोटे राज्य निर्बल थे, ईसाई आंधी ने सबको मिटा कर रख दिया, जब भाई–भाई परस्पर लड़ रहे होंगे तो शत्रु से मुकाबला करने की शक्ति कहां से आयेगी? अतः हम सबको स्पेन से सीख लेते हुए परस्पर मिल जुल कर, एक हो कर अपने दीनी मदरसों को बचाने का काम करना है और अपने अन्दर दीन की सुरक्षा का आभास पैदा करना है, जब तक दीन के महत्व का शुद्ध आभास न होगा हम दीन की वास्तविक सेवा न कर सकेंगे, दीन को बचाने की जिम्मेदारी हमारी है, शासन की नहीं, भारतीय संविधान शासन पर इस्लाम की सुरक्षा की जिम्मेदारी नहीं रखता बहुसंख्या यहाँ गैर मुस्लिमों की है अतः दीन बचाने में जो परिश्रम करना है हम मुसलमानों को स्वयं करना है, इस विषय में एक तो यह कि दीन की तालीम (शिक्षा) और दीन की दावत आवश्यकतानुसार हर एक को पहुंचे इस कार्य के लिए सारे मुसलमानों को आगे आना होगा यह काम किसी एक व्यक्ति अथवा किसी एक संस्था का नहीं है।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि पारस्परिक मतभेदों से बचना है, उदारता अपनायें, इस्लामिक विश्वास में दृढ़ता हो इस्लामिक विश्वास में कोई

शेष पृष्ठ .....28...पर...

सफरे हज़ और सफरे आख़िरत

—इमाम ग़ज़ाली रह0—

हिन्दी अनुवादः हाशमा अंसारी

नोटः यह सीख प्रद लेख हज़रत इमाम ग़ज़ाली रह0 ने किसी हज पर जाने वाले अपने मित्र को लिखा था, हज पर जाने वाले हजरात इससे लाभ उठायें।

ऐ दोस्त! खान—ए—काबा खुदा का घर है, यह ज़मीन व आसमान के बादशाह का दरबार है, तुम उसके दरबारे शाही को जा रहे हो। गोया उसी की जियारत को जा रहे हो। बेशक इस दुन्या में तुम्हारी आंख दीदारे इलाही की ताक़त नहीं रखती, लेकिन बैतुल्लाह का इरादा करने और उस घर की जियारत करने से उसी के वादे की बदौलत तुम्हें आखिरत में अल्लाह का दीदार नसीब हो सकता है। हज का यह सफर, आखिरत के उस सफर की तरह है जिसके बाद उस का दीदार होगा। देखो! आज का यह सफर बेकार न हो ताकि आख़िरत में मकसूद जियारत यानी दीदारे इलाही, हाथ से न जाने पाये। हर वक्त सफरे आखिरत को याद रखो, आखिरत की तैयारी करो तब ही मकसूदे सफर हासिल होगा।

दोस्तो! याद रखो इस सफर की अस्ल सवारी शौक की सवारी है जितनी लगन की आग तेज होगी उतनी ही मकसद तक रसाई यकीनी होगी अल्लाह से खूब महब्बत करो जिस दिल में अल्लाह से महब्बत होगी उस दिल में दीदारे काबा का शौक भड़क उठेगा, कि वह महबूब के दीदार का वसीला है, महबूब से जिस चीज को भी निस्बत हो जाये महब्बत करने वाले को वह चीज जान व दिल से महबूब हो जाती है। काबे को अल्लाह तआला ने मेरा घर कहा है, चूंकि वह उससे पाक है कि किसी घर में रहे, जब महबूब ने एक मकान को अपना घर बना लिया है तो उस तक पहुंचने के लिए शौक से बेताब दिल की रफाकत (मैत्री, दोस्ती) सबसे बढ़ कर अस्ल मकसद की ज़ामिन है।

तुम खान—ए—काबा के आर्जूमंद इस लिए हो कि वह अल्लाह तआला का घर है तो सिर्फ उसी निस्बत से उसका सफर करो, गोया अपनी नीयत और इरादा सिर्फ अल्लाह के लिए खालिस करो, खूब याद रखो कि बगैर खालिस के कोई इरादा और कोई अमल उसके यहां कबूल नहीं, पस खास तौर पर जिस बात में दिखावा हो और शोहरत की तलाश हो उस को छोड़ दो इससे बुरी बात और क्या हो सकती है कि सफर तो बादशाह से मुलाकात के लिए हो, और मकसद उसके सिवा कुछ और हो। दिल में बैतुल्लाह और रब्बुलबैत का मकाम पहचानोंगे, और याद रखोगे तो फिर इरादा उससे किसी कमतर चीज का न करोगे।

सफर हज़ भी हर सफर की तरह तमाम तअल्लुक़ात के छोड़ने से शुरु होता है घर छोड़ते हो, घर वालों को छोड़ते हो, माल तिजारत छोड़ते हो, वतन से जुदा होते हो, मगर इस सफर में कामयाबी के लिए सबसे पहले उन हकूक को अदा करो जो दूसरों के अपने हाथों में दबा रखे हों और ऐसे सारे हुकूक हकदारों को वापस कर दो, याद रखो, ज़र्रा बराबर जुल्म भी अगर किसी पर किया है तो वह तुम्हारा कर्ज़ख्वाह

है। वह तुम्हारा गिरेबान पकड़ कर कहता है तुम कहां जाते हो, शर्म नहीं आती कि जाते हो शहंशाह के घर, और अपने घर में उसके हुक्म को इस काबिल भी नहीं समझते कि उसको पूरा करो, डरते नहीं कि इतने गुनाहों के साथ कहीं वह तुम्हें वापस न कर दे। इसलिए अगर अपनी ज़ियारत की कबूलियत चाहते हो तो खासिल तौबा करके हर गुनाह से तअल्लुक तोड़ लो। हुकूक जो जुल्म से लिए है वापस कर दो और अल्लाह के हुक्म को पूरा करने में लग जाओ।

अपने दिल का तअल्लुक अल्लाह से जोड़ लो जिस तरह अपने सफर का रुख उसके घर की ओर कर लिया है। वतन से तअल्लुक इस तरह तोड़ लो जैसे फिर लौट कर न आओगे। सम्बन्धियों के लिए वसीयत लिख कर जाओ। सफर का सामान करते हो तो इतना खर्च साथ जरूर लेना कि किसी जगह कमी न पड़े, याद रखो कि आखिरत का सफर इस सफर से कहीं ज़ियादा मुश्किल और कठिन होगा, और उस सफर का सामान तकवा (परहेजगारी) है। तकवा के अलावा हर माल व असबाब दगा देगा, और मौत के वक्त पीछे रह जायेगा, इस फिक्र और कोशिश में रहो कि आमाल हज़ में ऐसी कोई कमी न आ जाये कि वह मौत के बाद तुम्हारा साथ न दें और इस सफर से तुम सफरे आखिरत के लिए तकवा का खज़ाना ज़ियादा से ज़ियादा जमा कर लो।

ऐ दोस्त! अहल व अयाल और माल व असबाब से रुखसत हो कर जब सवारी पर सवार हो तो अल्लाह का शुक्र अदा करो जिसने खुश्की पर, पानी में, हर किस्म की सवारी को तुम्हारे लिए तैयार कर दिया। हज़ की सवारी पर नज़र पड़े तो अपने जनाजे को निगाहों के सामने रखो, जिस पर सवार हो कर रोज़े आखिरत को जाना होगा। आज हज़ की सवारी पर सफ़र इस तरह करो कि ज़नाजे में सफ़र करना आसान हो, क्या मालूम मौत सफर हज़ से भी ज़ियादा करीब हो।

ऐ दोस्त एहराम के लिए चादर खरीदो तो वह दिन याद करो जब कफ़न की दो बे सिली चादर में लपेटे जाओगे। हो सकता है कि हज़ का सफर पूरा न हो और रास्ते ही में मौत आ जाये, मगर क़फन में लपेट कर अल्लाह तआला से मुलाकात तो यकीनी है।

उसके मुखालिफ (प्रतिकूल) लिबास पहने बगैर नही हो सकती, अल्लाह की जियारत भी उसके बगैर न होगी कि दुन्या को उतार कर उससे मुखालिफ लिबास में मलबूस हो जाओ।

ऐ दोस्त! शहर से निकलते हो तो अहल व अयाल और वतन से जुदा हो कर ऐसे सफर पर जाते हो जो दुन्या के और सफरों जैसा नहीं, सोचना चाहिए कि मेरा मकसद क्या है, मैं कहां जा रहा हूं और किस की जियारत के लिए जा रहा हूं। अच्छी तरह याद रखो कि इस सफर से तुम्हारा मकसद अल्लाह तआला से मुलाकात है, उसी के घर जा रहे हो। उसी के पुकार पर उसी के शौक दिलाने से उसी के हुक्म से सारे सम्बन्ध तोड़ कर उस घर की तरफ जा रहे हो। जिसकी जियारत के वसीले खुद घर के मालिक की जियारत तुम्हें नसीब होगी। मगर उम्मीद अपने आमाल से न रखो, भरोसा सिर्फ अल्लाह तआला के फज़ल पर रखो, वह मेरे

साथ होगा, मेरी मदद करेगा, मेरी रहनुमाई करेगा। यह करम उसका क्या कम है कि इस सफर से अगर तुम खाना काबा न भी पहुंच सको, और रास्ते ही में मौत आ जाये तो भी उससे मुलाकात इस हाल में होगी कि तुम उसकी तरफ सफर में हो, फिर उसके सारे वादे पूरे होंगे। क्या उसने वादा नहीं फरमाया है।

अनुवादः *और जो अपने घर से अल्लाह और रसूल की तरफ हिज़रत के लिए निकले, फिर रास्ते ही में उसे मौत आ जाये तो उसका अज़्र अल्लाह के जिम्मे वाजिब हो गया।*

(सूरः निसा 4/100)

शहर से निकल कर मीकात तक सफ़र करो, तो मौत के बाद शरीर से निकल कर मीकात कयामत तक के सफर के अहवाल याद करो, क़ब्र की तन्हाई और अजाब आगे के अन्देशे, और खतरात, मुनकरनकीर के सवालात! ऐ दोस्त! मीकात पर लब्बैक कहो, तो दिल खौफ व उम्मीद से लरज जाये, यह रब्बे क़ायनात की पुकार है जिस पर तुम कह रहे हो कि मैं हाजिर हूं। कहीं यह न कह दिया जाये कि न तुम खिदमत के लिए हाजिर हो न हमारे लिए इच्छुक, अबू सुलैमान दुर्रानी कहते हैं मैंने सुना है कि जो शख्स नाजायज माल रखते हुए हज़ करता है उससे कहा जाता है कि "न तेरा लब्बैक सही है और न तेरे लिए कोई भलाई है, जब तक तू वह चीजें न वापस करदे जो दूसरों की तेरे कब्जे में है" मगर इन्तिहाई खौफ के साथ पूरी उम्मीद रखो कि वह जवाब कबूल फरमायेगा। अपने अमल और ताकत पर न जाओ, अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम पर भरोसा रखो।

अल्लाह तआला की पुकार पर लब्बैक कहो तो वह वक्त भी याद रखो जब सूर फूंका जायेगा और लोग उठ कर मैदाने कयामत में जमा हो जायेंगे। सोचो कि मैं किस सफ़ में जाऊँगा और मेरा नाम–ए–आमाल किस हाथ में दिया जायेगा? दाहिने हाथ में आमाल नामा मिलेगा? या बायें हाथ में आमाल नामा मिलेगा? ऐ दोस्त! जो हरम में दाखिल हो जाता है मामून हो जाता है, मक्का में दाखिल हो तो अल्लाह तआला के गज़ब और आग को याद करो, और उससे पूरी उम्मीद रखो कि वह तुम्हें अपने गजब और अपनी आग से भी बचाऐ रखेगा। यह खटक भी दिल में रहे कि मैं इस निकटता का भागी न हुआ तो कहीं मुस्तहिक गज़ब न ठहरूं, मगर रहमान के घर तक पहुंच जाने के बाद, उसका मेहमान बन जाने के बाद, उसके पास बसेरा कर लेने के बाद चाहिए कि हर जगह उम्मीद, खौफ पर गालिब रहे, उसका करम आम है, और खाना काबा के इज्जतो अजमत की रिआयत से आने वाले का इकराम होता है, और पनाह मांगने वालों कि दुआ कबूल होती है।

ऐ दोस्त! ऐसा न हो कि खाना काबा पर नज़र पड़े और निगाहे दिल अज़मते काबा पर न हो, जो बैतुल्लाह को देखता है, वह यह जाने कि, गोया रब्बुल्बैत की तजल्ली को देखता है। उसके दीदर से होश व हवास टूट फूट जायें तो भी कम है। शुक्र करे कि उसने इस मकाम तक पहुंचाया, उस वक़्त को याद करे जब अपने रब के चेहरे के देखने की नेमत से शादकाम होंगे, और उम्मीद रखे कि आज जिस तरह उसका घर सामने है कल उसी तरह वह खुद निगाहों में होगा।

ऐ दोस्त! तवाफ का कसद करो, तो दिल जौक शौक खौफ, व रज़ा, महब्बतो तअज़ीम से भरा

हुआ हो, यह ख्याल न करना कि तवाफ का मकसद सिर्फ इतना है कि जिस्म बैतुल्लाह का तवाफ करे नहीं तवाफ का बरतर व आ़ला मकसद यह है कि दिल रब्बुल्बैत का तवाफ करे, याद का मरकज़ वही बन जाये, खाना काबा आलमे जाहिर में दरबारे इलाही का नमूना है। उन फरिश्तों की तरह तवाफ करो जो अर्श का तवाफ करते हैं।

हजरे असवद को बोसा दो तो यह जानो कि अल्लाह तआला के हाथ पर इताअत व फर्माबरदारी की बैयत कर रहे हो, हजरे असवद जैसा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला का दाहिना हाथ जमीन पर है, जिससे वह अपने बन्दों से इस तरह मुसाफा करता है जिस तरह एक आदमी अपने भाई से मुसाफा करता है (मुस्लिम) यह तुम्हारी खुशकिस्मती है कि यहां पहुंच गये, अब अल्लाह से वादा पूरा करने के वादे को मज़बूत कर लो और बे वफाई से बचने और उसके गज़ब से डरते रहने का अज़्म ताजा कर लो।

अब खाना काबा का पर्दा पकड़ लो गोया कि अल्लाह तआला का दामन पकड़ रहे हो, मुलतज़म से चिमट जाओ, गोया उससे करीब हो गये, यह वक्त और जगह रोने धोने, तौबा व इस्तिग़फ़ार करने का है। रो रो कर अर्ज करो कि "आप का दामन छोड़ कर कहां जाऊँ किसके आगे हाथ फैलाऊँ किसके कदम पकड़ लूं? मेरे लिऐ पनाह की जगह आपके सिवा कोई और नहीं। अगर आप करम न फरमायें और माफ न फरमायें और पनाह न दें तो कहां जाऊँ क्या करुं।

ऐ दोस्त! सफा और मरवा के दरमियान सई करो तो एक ख़ता कार आज़िज व ज़लील, मिस्कीन व दर मान्दा गुलाम की तरह जो बादशाही महल के सहन में चक्कर लगाये। कभी ख़ुलूस का इज़हार करो शायद कि बादशाह नज़रे रहमत से सरफराज़ करे। बार–बार आओ और जाओ और ख्याल करो कि मीज़ान के दोनो पलड़ों के दरमियान भी उसी तरह फिरना होगा, एक पलड़े में नेकियां और दूसरे में खतायें होंगी। न मालूम कौन सा झुक जाये इसी उम्मीद में सफ़ा व मरवा के दरमियान चलते रहो।

ऐ दोस्त! अरफात के मैदान में कदम रखो तो मैदान कयामत का मंजर याद करो, यहां लोगों की भीड़, आवाजों का बुलन्द होना, ज़बानों का फर्क़, रंगों में फर्क़, वहां कयामत के दिन अव्वल व आखिर सब जमा होंगे, सबसे पूछ गछ होगी, सबके चेहरे के रंग अलग होंगे, सब अपने–अपने आमाल के मुताबिक गिरोहों में बट जायेंगे। याद रखो वह मुकाम है जहां अल्लाह तआला कि रहमतें नाज़िल होती हैं। उन रहमतों को उन सालिहीन के दिल जज़्ब कर लेते हैं, जो एक वक्त में एक जगह जमा हो कर अल्लाह तआला के हुजूर में सज्दा रेज होते हैं। जिल्लत व शर्मिंदगी के साथ गिड़गिड़ाते हैं उसके आगे हाथ फैलाते हैं। रहमते इलाही के नाज़िल होने के लिए कोई तरीक़ा इसके बराबर नहीं कि नेक लोगों की हिम्मतें एक जगह जमा हो जायें और एक वक़्त में एक ज़मीन पर एक दूसरे कि मदद करें, यह गुमान न करना कि उनकी उम्मीदें पूरी न होंगी या महरूम रहेंगे, और उनकी कोशिशें बेकार जायेंगी। नहीं उन पर

वह रहमत नाजिल होगी जो सबको ढांप लेगी। यह वह मुकाम है कि कबूलियत की उम्मीद कामिल ही कबूलियत कि निशानी है। बस टूट कर अल्लाह तआला से मांगो।

ऐ अल्लाह! आप मेरी बात सुनते हैं, मेरा मुकाम देखते हैं, मेरे खुले छुपे को सब जानते हैं। मेरा कोई हाल, कोई मामला कोई ज़रूरत आपसे छिपी नहीं। मैं इन्तिहाई मुसीबत जदा और बिल्कुल फकीर हूं, कांपता हूं और डरता हूं। आपकी बारगाह में अपने गुनाहों का इकरार करता हूं। मेरा सवाल एक मिस्कीन का सवाल है, गिड़गिड़ा रहा हूं कि सख़्त जलील गुनाहगार हूं आपको पुकार रहा हूं कि डर का मारा और नुकसान जदा हूं। मेरी गर्दन आपके आगे झुकी हुई है। जिस्म आपके सामने जलील व रुसवा है, नाक आपके आगे खाक आलूद है। और आंख से आंसू बह रहे हैं। ऐसा न कीजिए की आपसे मांगने के बाद मैं बदबख़्त रहूं, मुझे अपनी रहमत व शफकत से ढांप लीजिए। ऐ सबसे बेहतर जिससे मांगने वाला मांगे, ऐ सबसे बेहतर अता करने वाले।

मेरे अल्लाह! मैं जानते बूझते आपकी नाफरमानियां करता रहा, आप पाक हैं। आपका मुझे माफ करना कितना बड़ा करम है। मेरे पास अपने अमल का वसीला भी नहीं, उम्मीद के सिवा कोई सिफारिश करने वाला नहीं। लेकिन तू तमाम करम करने वालों से ज़ियादा करीम है। अल्लाह मैं इस काबिल नहीं कि तेरी रहमत तक पहुंचूं, मगर तेरी रहमत इस क़ाबिल है कि मुझ तक पहुंचे। तेरी रहमत हर चीज़ पर शामिल है। और मैं भी एक चीज़ हूं। अगर्चे मेरे गुनाह बहुत बड़े हैं। लेकिन तेरे अज्र के मुकाबले में तो बहुत छोटे हैं। मेरे गुनाहों से दरगुजर कर, ऐ करीम।

ऐ दोस्त! कंकरियां मारने में न तो नफ्स को कोई मजा है और न अक़्ल को, अपनी अक़्ल को और अपने नफ़्स को अल्लाह तआला के हुक्म के आगे झुका दो।

कुर्बानी भी इताअते अम्र का इजहार है। अल्लाह से उम्मीद रखो कि कुर्बानी के हर जुज़ के बदले तुम्हारे हर जुज़ को आग से आज़ाद कर देगा।

बस ऐ दोस्त! सुनो! हज के हर क़दम पर सफरे आखिरत को याद रखो और उस सफर के लिए ज़ादे राह जमा करो ताकि कल तुम रब्बे काबा के इनआमात से सरफराज हो, और उसकी जियारत से शादकाम (सफल, कामयाब) हो।

❖❖❖

मुसलमानों की ईद.....

किया गया है। परन्तु रोजे का सवाब मैं स्वयं विशेष रूप में प्रदान करूंगा अतः शैतान का दुख में कुछ न खाना पीना और दुखी होना ठीक ही है कि उसके सारे प्रयास विफल हुए और मुसलानों का खुशी मनाना उचित है कि वह शैतान के बहकावे से बच गये और अल्लाह की रिजा के लिए रोजे रखने में सफल हुए मुसलमान लोग इस खुशी के इजहार में ईदगाह जाते वक्त यह कलिमात पढ़ते हैं अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, लाइलाह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अक्बर, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त और कोई पूज्य (माबूद) नहीं, और अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है और हर प्रकार की प्रशन्साएं और उत्तम गुण उसी के लिए हैं, इस प्रकार मुसलमान लोग शैतान के रोजे (भूख प्यास) को और कष्ट दायक बना देते हैं। ◆◆◆

लीबिया की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि तथा विद्यमान दशा

—मौलाना सय्यिद इनायतुल्लाह नदवी

—हिन्दी इमला: हुसैन अहमद

लीबिया महाद्वीप अफ्रीका के क्षेत्रफल के लिहाज से सबसे बड़ा तीसरा देश है परन्तु जनसंख्या बहुत कम है लगभग 18 लाख वर्ग किलोमीटर वाले देश की जनसंख्या केवल लगभग 70 लाख है, इस देश का अधिकांश भाग मरुस्थल है तथा निवास के योग्य नहीं है, परन्तु लीबिया महाद्वीप अफ्रीका का सबसे अधिक धनवान देश है, लीबिया पूरे अफ्रीका में सबसे अधिक तेल पैदा करने वाला देश है, पूरे अफ्रीका में प्रति व्यक्ति आय सबसे अधिक लीबिया में है। सन् 1951 से पहले लीबिया नाम का कोई देश न था, अपितु इसके पश्चिमी भाग को तराब्लस और पूर्वी भाग को बरका कहा जाता था, बरका का क्षेत्र मिस्र में शामिल था और तराब्लस तूनिस में शामिल था।

सन् 100 ई0 पूर्व मसीह से यह क्षेत्र बरबरों का निवास स्थान रहा है, बरबरों का गोत्र यहीं से पूरे अफ्रीका में फैला और उनके शासन स्थापित होते रहे, हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि0 के खिलाफत काल सन् 641 ई0 में विद्यमान लीबिया का पूर्वी भाग "बरका" इस्लामिक खिलाफत का एक भाग बना और सन् 647 ई0 में हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि0 के खिलाफत काल में उसका पश्चिमी भाग "तराब्लस" भी इस्लामी खिलाफत में शामिल हो गया और तमाम "बरबरी" इस्लाम ले आये। उस समय से अब्बासी खिलाफत के पतन तक यह क्षेत्र महान इस्लामी शासन का एक भाग बना रहा। सन् 909 ई0 में मिस्र के फातमी शासन का बरका तथा तराब्लस दोनों पर अधिकार हो गया, जो सन् 937 ई0 तक बाकी रहा फिर यहां सनहाजियों का शासन स्थापित हुआ। सन् 1148 ई0 में नारमन ईसाइयों ने इस क्षेत्र पर अधिकार जमा लिया परन्तु शीघ्र ही 1160 ई0 में मुसलमानों ने नारमनों को मार भगाया और फिर इस क्षेत्र में इस्लामी शासन स्थापित कर दिया, सन् 1228 ई0 में यहां बनु हफ्स सत्ता में आ गये, उनका शासन 300 वर्षों तक बाकी रहा, सन् 1510 ई0 में फिर यूरोप के ईसाइयों ने तराब्लस पर अधिकार कर लिया जो 40 वर्षों तक चलता रहा, सन् 1551 ई0 में तराब्लस, बरका और दक्खिनी भाग फजान यह सभी क्षेत्र महान उस्मानिया शासन में शामिल हो गये और इस पूरे क्षेत्र को तराब्लस का नाम दिया गया।

सन् 1911 ई0 में इटली की सेना ने तराब्लस युद्ध में तुर्कों को पराजित करके यहां से उस्मानिया शासन का अन्त कर दिया, और उस समय से यहां इटली का साम्राजी शासन स्थापित हो गया, इस क्षेत्र पर 23 वर्षों तक इटली का अधिकार रहा, सन् 1943 ई0 में विश्वयुद्ध काल में विद्यमान लीबिया के एक भाग पर ब्रिटेन का और एक भाग पर फ्रांस का अधिकार हो गया, तराब्लस और बरका पर ब्रिटेन ने अधिकार जमाया तथा दक्खिनी भाग "फजान" पर फ्रांस ने कब्जा किया।

इटली के अधिकार के समय इस साम्राजी शासन के विरुध सय्यिद अहमद सन्नूसी रह0 ने स्वतंत्रता का आन्दोलन चलाया था और इटली की सेना से सन्नूसियों का सत्ताधारी युद्ध चलता रहा, जब ब्रिटेन तथा फ्रांस का शासन स्थापित हुआ तो उस वक्त सन्नूसी अमीर सय्यिद मुहम्मद इद्रीस का ब्रिटेन शासन से समझौता हो गया, जिसके अंतर्गत ब्रिटेन में सन् 1949 ई0 में सय्यिद मुहम्मद इद्रीस को बरका का शासक मान लिया। सन् 1951 ई0 ब्रिटेन ने तराब्लस का और फ्रांस ने फजान का शासन भी सय्यिद मुहम्मद इद्रीस को सौंप दिया, इस प्रकार लीबिया के नाम से एक संयुक्त शासन अस्तित्व में आ गया और सय्यिद मुहम्मद इद्रीस इस संयुक्त शासन के बादशाह मान लिये गये।

20 वर्षों तक शाह इद्रीस इस शासन के शासक बने रहे सन् 1969 ई0 में जब शाह इद्रीस यूनान के दौरे पर थे, उस समय सेना के एक कमांडर कर्नल मुअम्मर क़ज़्ज़ाफी ने लीबिया की सत्ता पर अधिकार कर लिया।

कर्नल मुअम्मर क़ज़ाफी ने 45 वर्षों तक लीबिया पर बड़े ही वैभव के साथ शासन किया, उसने सभी पार्टियों तथा राजनैतिक संस्थाओं को अवैध घोषित कर दिया, हर प्रकार की गोष्ठियों, जल्सों और प्रदर्शनों पर प्रतिबन्ध लगा दिया, एक लम्बे समय तक कर्नल कज़्ज़ाफी के अत्याचार सहते सहते जब लीबिया के जन साधारण लोगों ने तूनिस और मिस्र में राजनैतिक परिवर्तन तथा वहां के सत्ता धारियों का पतन देखा तो वह भी कर्नल क़ज़्ज़ाफी के विरुद्ध उठ खड़े हुए और 16 फरवरी 2011 ई0 से कर्नल क़ज़्ज़ाफी के विरुद्ध विरोध प्रदर्शन आरम्भ कर दिये विरोध प्रदर्शन करने वालों पर पुलिस ने गोलियां चलाईं, तो विरोध प्रदर्शन करने वालों ने भी भारी शस्त्र संघर्ष का मार्ग अपना लिया, सेना तथा क्रांतिकारियों के बीच लगातार युद्ध चलता रहा, अन्ततः क्रान्तिकारियों ने 20 अक्टूबर 2016 ई0 को क़ज़्ज़ाफी जैसे भयंकर शासक को मार कर उनकी 45 वर्षीय सत्ता का अंत कर दिया।

20 सितम्बर 2012 ई0 को नये अध्यक्ष (सद्र) मुहम्मद मुगारीफ का चयन हुआ और 15 अक्टूबर 2012 ई0 को अली ज़ैदान लीबिया के प्रधान मंत्री चुने गये थे, परन्तु क्रान्ति में बढ़ चढ़ कर भाग लेने वालों में दो गुट हो गये, उनमें एक गुट इस्लाम पसन्द था दूसरा सेकूलर वादी था दोनों में लड़ाई छिड़ गयी, 12 मार्च 2014 ई0 को पार्लियामेंट ने प्रधानमंत्री अली ज़ैदान को अलग कर अब्दुल्लाह अस्सानी को प्रधानमंत्री नियुक्त कर दिया, इसके पश्चात ही समस्यायें उत्पन्न हुईं, इस्लाम पसन्दों तथा सेकूलर तत्वों के बीच शस्त्र धारी लड़ाई छिड़ गयी, यहां तक कि 30 अगस्त 2014 ई0 को इस्लाम पसन्दों का "फज्र लीबिया" की राजधानी तराब्लस पर अधिकार हो गया और सेकूलर पसन्द अब्दुल्लाह अस्सानी पूर्वी नगर "तबरक" की ओर जाने पर विवश हुए, इस प्रकार लीबिया का देश दो भागों में बट गया, राजधानी और देश के अधिकांश भागों पर इस्लाम

पसन्द संघ "फज्र लीबिया" का अधिकार है, जबकि पूर्वी भाग के थोड़े क्षेत्र पर सेकूलर वादियों का अधिकार है, इन दोनों के बीच लड़ाई बराबर चल रही है, अमरीका तथा ईस्राईल और यूरोप देशों का सम्पूर्ण सहयोग सेकूलर वादियों को प्राप्त है उनकी इच्छा है कि सेकूलर वादियों का पूरी लीबिया पर अधिकार हो और फिर इस्लाम पसन्दों के विरुद्ध कार्यक्रम करके इस्लाम पसन्दों से बदला लिया जाये और उनका अन्त कर दिया जाये।

9 अक्टूबर 2015 ई0 को मराकश की राजधानी "रबात" में मराकशी शासक की मध्यस्थता में लीबिया के दोनों गुटों को एक समझौते पर जमा करने का प्रयास किया गया और "फाइज अस्सिराज" का नाम "मुत्तहिदा कौमी हुकूमत" के प्रधानमंत्री के तौर पर परस्तुत किया गया, परन्तु अब तक इस पर अमल न किया जा सका, लीबिया अब तक दो समानांतर शासकों में बंटा हुआ है।

❖❖❖

इस्लामिक मदरसों.....

कमी अथवा अधिकता बर्दाश्त नहीं, कोई समझौता नहीं, न ही इसमें कोई गुन्जाइश है लेकिन जहां साधारण जनों के स्तर की बात है, उसमें आपस में मिलजुल कर काम कर सकते हैं और इस्लाम के जो दूसरे आवश्यक कार्य हैं उनमें एक दूसरे के साथ उदारता से काम लें और एकता बाकी रखें।

अतः मैं जब किसी मदरसे में जाता हूं और कुछ सुनाने का अवसर मिलता है तो इस ओर लोगों को ध्यान देने को कहता हूं कि वह समझें कि मदरसे बहुत जरूरी हैं, और वह सारी बातें तथा वह सारे परामर्श जो मदरसों को हानि पहुंचाने वाले हों उनसे बचने का पूरा प्रयास करें इसलिए कि बड़ी शक्तियां भयंकर षडयंत्रों के साथ इन मदरसों और इस्लाम को मिटाने में लगी हुई हैं, अतः इन मदरसों की सुरक्षा करनी है उसके द्वारा जो लाभ पहुंचता है उसमें हम सबको मदद करने की जरूरत है हम मुसलमानों को इसकी चिन्ता होनी चाहिए कि दीन सुरक्षित रहे, चिन्ता के साथ प्रयास भी आवश्यक है, इसके लिए आवश्यक उपाय अपनाने की ज़रूरत है कमसे कम हर बड़े मुस्लिम खानदान का एक व्यक्ति दीन का आलिम बन कर अपने खानदान और समाज का दीनी नेतृत्व करे, सब लोग तो दीनी आलिम नहीं बन सकते परन्तु इतने दीनी आलिम तो होने ही चाहिए जिन से उम्मत को दीन पर जमाये रखने का काम हो सके और उम्मत दीन से दूर न हो, इसके लिए आप तुरन्त इसका परिणाम न देखेंगे, तीस वर्षों में पीढ़ी बदल जाती है जो काम आप आज कर रहे हैं तीस वर्षों पश्चात आपकी सन्तान दीन प्रसारण में लगी होगी, अतः हमारी जिम्मेदारी दीन प्रसारण की है, इन मदारिस के मूल्य को समझिए इन का सम्मान कीजिए और इनको शक्ति पहुंचाने हेतु जो साधन आपके पास हों उनको काम में लाइये तथा अमौलिक बातों और मानवीय बातों में उदारता से काम लीजिए, इससे इस्लामी समाज को शक्ति प्राप्त होगी।

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः ईद की नमाज़ का क्या हुक्म है?

उत्तरः ईदैन यानी ईदुल फित्र और ईदुल अज़हा की नमाजें हर आकिल (बुद्धिमान) बालिग (व्यस्क) मुसलमान मर्द पर वाजिब है, जहां जुमें की नमाज होती है वहां ईद की नमाज़ पढ़ी जा सकती है ईदैन की नमाज़ जमाअत से पढ़ी जाती है, कोई अकेला ईदैन की नमजा़ नहीं पढ़ सकता, ईदैन की नमाज़ मस्जिद में भी हो जायेगी लेकिन इस का ईदगाह में पढ़ना सुन्नत है।

प्रश्नः ईद के दिन कौन कौन सी बातें सुन्नत हैं?

उत्तरः ईदुल फित्र जिसको आम तौर से ईद कहा जाता है उस दिन बारह बातें मसनून या सुन्नत हैं:—

1. ईद के दिन बहुत सवेरे सो के उठना।
2. गुस्ल करना यानी नहाना।
3. मिस्वाक (दातून) करना।
4. अच्छे कपड़े पहन्ना (नये होना ज़रूरी नहीं)।
5. खुशबू (सुगन्ध) लगाना।
6. कोई मीठी चीज़ सिवैयां वगैरह खाना।
7. सद—कए—फित्र अदा करना, सद—कए—फित्र देना वाजिब है परन्तु उसका ईद के दिन निकालना या देना सुन्नत है अगर आखिर रमजान में दे दिया तो जियादा सवाब पाया।
8. ईदगाह जल्दी जाना।
9. ईदगाह पैदल जाना।
10. ईदगाह जाते वक्त यह कलिमात धीरे धीरे पढ़ते हुए जाना—

अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, लाइलाह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्द, अनुवादः अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, सारी तारीफें अल्लाह ही के लिए हैं।

11. ईद की नमाज़ ईदगाह में पढ़ना।
12. ईदगाह से वापस आने में रास्ता बदल देना।

प्रश्नः ईद की नमाज़ की नीयत किस तरह करना चाहिए?

उत्तरः ईद की नमाज़ की नीयत दिल में करना ज़रूरी है ज़बान से भी कहलें तो कोई हरज़ नहीं, अल्फाज यह हैं: नीयत करता हूं मैं दो रकअ़त नमाज़ ईदुल फित्र वाजिब की मये छः तक्बीरात ज़ाइद के पीछे इस इमाम के मुंह मेरा तरफ काबा शरीफ के फिर अल्लाहु अक्बर कह कर कानों तक हाथ ले जाये और हाथ बांध ले, यह बातें दिल में सोच लें तब भी नीयत हो जायेगी।

प्रश्नः छः जाइद तक्बीरें कहां, कब और कैसे कही जाती हैं?

उत्तरः यहां हम पूरी नमाज का तरीका बताते हैं— नीयत के बाद अल्लाहु अक्बर कहते हुए कानों तक हाथ ले जायें और हाथ बांध लें यह अल्लाहु अक्बर कहना हर नमाज़ी के लिए फर्ज है इसके कहे बगैर नमाज़ न होगी, फिर सना पढ़े, फिर

अल्लाहु अक्बर कह कर कानों तक हाथ ले जायें और हाथ छोड़ दें (यह पहली जाइद तक्बीर हुई) फिर अल्लाहु अक्बर कहते हुए कानों तक हाथ ले जायें और हाथ छोड़ दें (यह दूसरी जाइद तक्बीर हुई) फिर अल्लाहु अक्बर कहते हुए कानों तक हाथ ले जायें और हाथ बांध लें (यह तीसरी जाइद तक्बीर हुई) यह तीनों तक्बीरें जबान से कहना वाजिब हैं। अब इमाम सुरतुल फातिहा जहरन पढ़ेगा, सूरतुल फातिहा के खत्म होने पर सब नमाज़ी धीरे से आमीन कहेंगे। फिर इमाम कोई सूरत या आयतें मिलायेगा मुक्तदी ध्यान से सुनें फिर दूसरी नमाज़ों की तरह रुकूअ़, क़ौमा (सीधे खड़े होना) और दो सजदे होंगे फिर इमाम और मुक्तदी सब दूसरी रक्अत के लिए खड़े होंगे अब इमाम फिर आवाज से सूरतुल फातिहा पढ़ेगा और पहले की तरह सब आमीन कहेंगे फिर इमाम कोई सूरत या कुछ आयतें मिलायेगा फिर इमाम और मुक्तदी सब अल्लाहु अक्बर कहते हुए कानों तक हाथ ले जायेंगे और हाथ छोड़ देंगे (यह चौथी जाइद तकबीर हुई) फिर अल्लाहु अक्बर कहते हुए कानों तक हाथ ले जायेंगे और हाथ छोड़ देंगे (यह पांचवी जाइद तक्बीर हुई) फिर अल्लाहु अक्बर कहते हुए कानों तक हाथ ले जायेंगे और हाथ छोड़ देंगे (यह छठी जाइद तक्बीर हुई) यह तीनों तक्बीरें भी ज़बान से कहना वाजिब हैं, फिर अल्लाहु अक्बर कहते हुए रुकूअ़ में जायेंगे और दूसरी नमाज़ों की तरह दूसरी रकअत पूरी करेंगे, फिर इमाम खड़े हो कर जुमे के खुत्बों की तरह दो खुत्बे देगा। ईदैन की नमाज़ में नमाज़ के बाद या खुत्बों के बाद दुआ साबित नहीं लेकिन कुछ इमाम नमाज़ के बाद और कुछ खुत्बों के बाद दुआ मांगते हैं इसमें कोई हरज भी नहीं।

यह ईद की नमाज़ पढ़ने का अहनाफ़ का तरीक़ा बताया गया, अहले हदीस और हंबली हजरात बारह जाइद तक्बीरें कहते हैं अगर उनके पीछे ईद की नमाज़ पढें तो उनकी इत्तिबा में हनफी भी बारह जाइद तक्बीरें कहलें सबूत छः का भी है और बारह का भी।

प्रश्नः अगर किसी ने सद–कए–फित्र न रमजान में दिया न ईद के दिन तो अब उसके लिए क्या हुक्म है?

उत्तरः सद–कए–फित्र साहिबे निसाब पर वाजिब है, अगर उसने ईद के दिन तक अदा नहीं किया तो अब अदा करे।

प्रश्नः सद–कए–फ़ित्र किस को दिया जायेगा?

उत्तरः सद–कए–फित्र गरीब मुसलमान (जो साहिबे निसाब न हो) का हक है, माँ बाप, दादा दादी और औलाद, बेटा बेटी, पोता पोती, नवासा नवासी को नहीं दे सकते इसी तरह सय्यिदों को भी सद–कए– फित्र नहीं दे सकते।

प्रश्नः औरतों के लिए जुमे की नमाज़, ईदैन की नमाज़ और जनाजे की नमाज़ का क्या हुक्म है?

उत्तरः वह तमाम नमाज़ें जिनमें जमाअ़त हुआ करती है दौरे फित्ना की वजह से औरतों का उनमें शरीक होना ममनूअ़ है अहदे नबवी जो खैरुल कुरून का जमाना था में शिरकत की इजाजत

थी, लेकिन अहदे सहाबा (सहाबा काल) में सहाबा रज़ि0 ने, जब फित्ने का अन्देशा महसूस किया तो औरतों को अहदे फारूकी में जुमा और ईदैन में शिरकत से रोक दिया गया, नमाज़े जनाजा औरतों पर किसी दौर में नहीं रही, नमाजे जनाजा और मुर्दों की तदफीन की जिम्मेदारी मर्द हज़रात के जिम्मे रखी गई है। आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुन्या से जाने के बाद कुछ औरतों के मस्जिद में आने का जो अन्दाज था हज़रत आइशा रज़ि0 ने उस पर बरहमी जाहिर फरमाई और फरमाया अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम को इस हाल में देखते तो तुम्हे मस्जिद में आने से रोक देते, इस बारे में रिवायतें हदीस की किताबों में मौजूद हैं जो मुमानिअ़त पर वाज़ेह अन्दाज़ में दलील हैं।

हरमैन शरीफैन में औरतें सब नमाजों में शरीक़ होती हैं, वहां का इन्तिजाम खास है, वहां फ़ित्ने का अन्देशा भी नहीं है इस लिए वहां औरतों का जुमा, ईदैन और जनाजे की नमाज से रोका नहीं जाता न रोका जा सकता है।

नोटः मुफ़्ती जफर आलम नदवी द्वारा नीचे के प्रश्नोत्तर रजब मास की महत्वपूर्ण जानकारियों वाला पचीस अप्रैल 2016 के "तामीरे हयात" में प्रकाशित हुआ उस समय अप्रैल का सच्चा राही हमारे पाठकों के हाथ में था और मई का अंक प्रेस में था तथा जून का अंक कम्पोजिंग के अन्तिम चरण में था अतः इसे हम जूलाई के अंक में दे रहे हैं आशा है कि हमारे पाठक इसे पसन्द करेंगे।

प्रश्नः 22 रजब को बाज़ जगहों में कूंडे का रवाज है बाज अहले सुन्नत वल जमाअ़त के लोग भी यह अक़ीदा रखते हैं कि इस तारीख को हज़रत इमाम जाफर सादिक रह0 पैदा हुए थे उनके नाम पर यह रस्म होती है, खाने पकवाये जाते हैं और बराए ईसाले सवाब, फुकरा में खाना तक्सीम होता है, क्या शरीअत में इसकी कोई अस्ल है?

उत्तरः कूँडों की यह रस्म बे अस्ल है किताब व सुन्नत और सलफे सालिहीन से साबित नहीं है, बल्कि यह खिलाफे शरअ़ है, 22 रजब को हज़रत इमाम जाफर सादिक रह0 की न तो तारीखे पैदाइश है न तारीखे वफात इमाम जाफर सादिक रह0 की तारीखे पैदाइश 8 रमजान सन् 80 या 83 हिज्री है और वफात शव्वाल सन् 148 हिज्री में हुई, मुस्तनद कुतुबे तारीख से यही मालूम होता है अलबत्ता 22 रजब सन् 60 हिज्री को हज़रत मुआविया रज़ि0 की वफात हुई है।

(तारीख तबरीः 6/180) जो लोग इस दिन मिठाइयां तक्सीम करते हैं ब जाहिर उनका मक्सद हज़रत मुआविया रज़ि0 की वफात पर खुशी मनाना है, उस पर परदा दारी के लिए हज़रत जाफर सादिक रह0 की यौमे पैदाइश के जश्न का इज्हार करते हैं, मुसलमानों को इस किस्म की चीजों को समझने और उससे बचने की जरूरत है।

प्रश्नः मुसलमानों का एक तब्का 7, 13 और 27 रजब को रोजा रखता है और इसको बाइसे सवाब समझता है, क्या शरीअत में इसका

कोई सुबूत है?

उत्तर: माहे रजब की मजकूरा तारीखों में रोजा रखने पर फ़जीलत की खास रिवायतें मिलती हैं लेकिन यह रिवायातें मुहद्दिसीन के नजदीक सही नहीं हैं बल्कि बाज जईफ और बाज मौजूअ़ (गढ़ी हुई) हैं शैख अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी रह0 ने "मा सबत बिस्सुन्ना" पेजः 185) में इन रिवायतों को बयान किया है और मौजूअ़ (गढ़ी हुई) बताया है।

प्रश्न: रजब के महीने में, जुमे के दिन बाज मुसलमान मीठी रोटी पकवाते हैं और उस पर 41 बार सू--रए--मुल्क पढ़वाते हैं, यह रोटी मय्यित की जानिब से सद्का व खैरात की जाती है और लोग उसको खुशी से खाते हैं और मस्जिदों में तक्सीम करवाते हैं, शरीअ़त में इसकी क्या हकीकत है? क्या इस रोटी पर कुर्आन पढ़ने की उजरत लेना जाइज है?

उत्तर: ईसाले सवाब की यह सूरत किताब व सुन्नत से साबित नहीं है, यह चीज़ न सहाबा रज़ि0 में थी और न सलफे साहिलीन के यहां, लोगों ने अपने तौर पर राइज कर लिया है, इसलिए इस रवाज़ को खत्म करना जरूरी है, रोटियों पर कुर्आन मजीद पढ़ कर उजरत लेना भी जाइज़ नहीं है।

(मजमूआ रसाइल इब्ने आबिदीन, रिसाला शिफाउल अ़लीलः1/152)

प्रश्न: 27 रजब को आम तौर से शबे मेराज़ समझते हैं और इस रात में वअ़ज व तकरीर के अलावा नफ़्ल नमाज़ें पढ़ने का अहतिमाम करते हैं और इसे बड़े सवाब का काम समझते हैं क्या शरीअत में यह दुरुस्त हैं?

उत्तर: 27 रजब को शबे मेराज समझ कर वअ़ज व नसीहत की मजलिसें करना और नफ़्ल नमाज़ों का अहतिमाम करना किताब व सुन्नत से साबित नहीं है, आम दिनों और रातों की तरह इस रात में भी नवाफिल पढ़ने में कोई हरज नहीं है, लेकिन तख्सीस के साथ इजाजत नहीं है। (यानि इस रात में खास तौर से नवाफिल पढ़ने की इजाजत नहीं है)।

(मा सबत बिस्सुन्नाः 191--192)

प्रश्न: शबे मेराज, शबे बराअत और शबे कद्र को फूल पत्तियों से मस्जिदों को सजाना कैसा है? अगर इस का मक्सद मुसलमानों मे इन रातो की अहमियत बिठाना और इबादत का एहतिमाम करवाना हो तो क्या शरीअत में इसकी गुंजाइश है?

उत्तर: शबे मेराज के बारे में कोई सही रिवायत नहीं मिलती अलबत्ता शबे बराअ़त और शबे क़द्र की फजीलत पर रिवायात मौजूद हैं, उन रातों में नवाफिल पढ़ना, तिलावत करना और जिक्र व तस्बीह और दुआ व इस्तिगफार पढ़ना दुरूस्त है और सवाब का काम है, लेकिन फूल पत्तियों से मस्जिदों को सजाने की इजाजत शरीअत में नहीं है और न यह इस्लामी मिजाज व मज़ाक़ से मेल खाती हुई कोई चीज़ है, इस्लाम में फजाइल व बरकात हासिल करने का सादा तरीका है न कि त्यौहारों और मेलों का अन्दाज इख्तियार करने का, यह गैरों का तरीका है गैरों से तशाबुह इख्तियार करने से मना किया गया है।

(सुन्ने अबुदाऊदः 2/558)

❖❖❖

भारत......की जय

—इं0 जावेद इक़बाल

दुन्या के इतिहास में यह बात महफ़ूज़ है और कुर्आने पाक गवाह है कि हर ज़माने और हर इलाक़े में जब क़ौमें गुमराही के रास्ते पर चली हैं तो उन्होंने हर उस चीज़ को खुदा का दर्जा दिया है जिससे उन्हें प्यार होता है या ख़ौफ़ होता है। फिर उनके नाम औरतों (देवियों) जैसे रख कर उनकी मूर्तियां बना कर उनकी पूजा का एहतमाम (प्रचलन) किया है। इसी को कुर्आने पाक में फ़रमाया गया है कि "यह मुशरिक ख़ुदा को छोड़ कर केवल औरतों (देवियों) को पुकारते हैं और हक़ीकत में यह शैतान की पूजा करते हैं। (सूरः *निसा* आयत 117) इस आयत की तफ़सीर में हज़रत आएशा रज़ि0 फरमाती हैं कि अरबी शब्द "इनासा" (औरतों) से इशारा बुतों की तरफ़ है। ज़हहाक रह0 ने फरमाया है कि मुशरिक लोग फ़रिश्तों को पूजते थे और उन्हें अल्लाह की लड़कियां मानते थे और कहते थे कि इनकी पूजा से हमारा मक़सद खुदा की कुरबत (निकटता) हासिल करना है, और इनकी तस्वीरें औरतों जैसी बनाते थे।

इस आयत की रौशनी में जब हम अपने साथ रहने बसने वाली क़ौम के अक़ीदों (आस्थाओं) पर नज़र डालते हैं तो हमें इनके द्वारा पेश किए जाने वाले नए–नए नारों पर ज़र्रा बराबर भी आश्चर्य नहीं होता। कुरआन तो हमें पहले ही सावधान कर चुका है कि "शैतान तो यही चाहता है कि उन्हें (ईमान वालों को) बहका कर गुमराही में फंसा दे" (सूरः निसा आयत 60) आगे आयत नं0 89 में फरमाया कि उनकी तो चाहत है कि जिस तरह के वे काफ़िर हैं तुम भी उन की तरह कुफ़्र करने लगो और फिर सब एक जैसे हो जायें।

हमारे मुल्क में सवर्ण वर्ग के सभी लोगों की हमेशा से यही कोशिश रही है जो वर्तमान में खुल कर सामने आ गई है और आमिराना (Dictator) अन्दाज़ में आदेश दिये जा रहे हैं कि फ़लां (अमुक) और फ़लां नारा लगाओ। तभी तो एक बाबा जी ने यह तक कह डाला कि संविधान आड़े न आता तो वह अमुक नारा न लगाने वाले लाखों की गर्दनें उड़ा देते।

तअ़ज्जुब की बात तो यह है कि आज़ादी की लड़ाई के वक़्त जिन लोगों ने देश के प्रति प्रेम भावना में पै[illegible] एक कांटा भी न [illegible] दिया वे आज उस क़ौम को देश प्रेम का पाठ पढ़ा रहे हैं जिसके मज़हब का एक हिस्सा है देश प्रेम। तभी तो रसूलुल्लाह सल्ल0 ने हिजरत के लिए मजबूर किए जाने पर वतन की महब्बत में मक्का नगर को मुख़ातिब (सम्बोधित) करके

कहा था "ख़ुदा की क़सम, तू मेरी निगाह में सबसे ज़ियादा बेहतरीन और प्रिय नगर है अगर मुझे विवश करके यहां से निकाला न गया होता तो मैं हरगिज़ न निकलता" फिर मदीना नगर पहुंच कर जब उसे अपना वतन बना लिया तो मदीना नगर के लिए दुआ की "ऐ अल्लाह इस नगर में उस बरकत से दो गुना बरकत उतार दे जो तू ने मक्का नगर में रखी है।"

स्पष्ट है कि मुसलमानों को देश प्रेम कोई क्या सिखाएगा उनकी तो घुट्टी में देश प्रेम शामिल है।

मगर देश प्रेम तो केवल बहाना है अस्ल बात तो वही है जो कुरआन ने पहले ही हमें बता दी है कि वे लोग (मुनकिर व मुनाफ़िक) तो यही चाहते हैं कि तुम भी उनकी तरह मुनकिर हो जाओ"।

"भारत माता की जय" केवल एक नारा नहीं है, यह एक काल्पनिक देवी है जिसे अन्य अनेक देवियों की तरह विभिन्न शक्लों में पेश किया जाता है आजकल जो रूप भारत माता को दिया गया है वह ऐसा है कि एक औरत के हाथ में तलवार त्रिशूल है और वह शेर पर बैठी हुई है और दूसरे हाथ में भगवा झंडा है आर0एस0एस0 ने तो स्वयं ही यह ऐलान कर दिया है कि "भारत माता की जय" केवल एक नारा नहीं है बल्कि यह एक अक़ीदा है।

भले ही "माता" एक काबिले एहतराम शब्द है, इस्लाम में मां के क़दमों के नीचे जन्नत का तसव्वुर है मगर एहतराम व महब्बत अलग चीज़ है और इबादत अलग चीज़ है। इस्लाम अल्लाह के अलावा किसी अन्य की इबादत की क़तई इज़ाज़त नहीं देता। कुरआन में अनेक बार अल्लाह तआला ने स्पष्ट शब्दों में फरमा दिया है कि अल्लाह अपने साथ साझी बनाने वालों को नहीं माफ़ करता, इसके सिवा जिसे चाहे माफ़ कर देता है, जो ख़ुदा के साथ साझी ठहराये उसने बहुत बड़ा गुनाह किया।

सूरः निसा–48)

इस सिलसिले में कुर्आन ने तो इतनी एहतियात (सावधानी) सिखाई है कि फ़रमाया "ऐ ईमान वालो 'राईना' न कहा करो, "उनज़ुरना" कहा करो।

(सूरः बकरा–104)

क्योंकि रसूलुल्लाह सल्ल0 की महफ़िल में यहूदी भी आ कर बैठते थे मगर ध्यानपूर्वक बात न सुनते थे जब दुबारा आप सल्ल0 की तवज्जेह अपनी तरफ़ करना चाहते तो ज़बान को दबा कर "राईना" कहते जिसके अर्थ बदल जाते और मतलब होता "ऐ हमारे चरवाहे"। मुसलमान भी इस शब्द "राइना" को बोलने लगे थे क्योंकि इस शब्द के दो अर्थ निकलते थे इसलिए अल्लाह तआला ने फ़ौरन हुक्म दिया कि "उनज़ुरना" कहा करो।

मुसलमानो को ध्यान देने की ज़रूरत है कि जिस मज़हब में इतनी एहतियात सिखाई गई हो उस मज़हब के मानने वाले बिना सोचे समझे इस तरह के मुशरिकाना

शेष पृष्ठ .....36...पर...

मेरा तरीक अमीरी नहीं फ़क़ीरी है

(मेरे जीवन का उद्देश्य उच्च स्तर का जीवन प्राप्त करना नहीं अपितु फ़क़ीरी (ग़रीबी) में भी सत्य पर जमे रहना है) —खुर्रम मुराद

हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि0 कहते हैं कि मैं एक बार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म की सेवा में उपस्थित हुआ तो घर की गृहस्थी की दशा देखी, आपके पवित्र शरीर पर एक तहबन्द है, आप एक खुर्री चारपाई पर आराम कर रहे हैं सरहाने एक तक्या है जिसमें खजूर की छाल भरी हुई है, एक ओर थोड़े से जौ रखे हैं, एक कोने में किसी जानवर की खाल रखी है कुछ मशकीजे की खालें खूंटी पर लटक रही हैं, यह देख कर हज़रत उमर रज़ि0 की आंखों से आंसू गिरने लगे, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने रोने का कारण पूछा तो हज़रत उमर रज़ि0 ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म मैं क्यों न रोऊँ आपके शरीर पर चारपाई के बाध के प्रभाव से बद्धियां पड़ गई हैं और यह आपके घर के सामान की कोठरी है, जिसे मैं देख रहा हूं, कैसर (रूम का सम्राट) तथा किसरा (ईरान का सम्राट) तो संसार के मजे लूटें और अल्लाह के प्रिय पैगम्बर के घर के सामान की यह दशा हो? आपने उत्तर दिया ऐ खत्ताब के बेटे क्या तुमको यह पसन्द नहीं कि वह दुन्या लें और हम आखिरत (अगले जीवन का सुख) लें''

(सीरतुन्नबी, अल्लामा शिबली नोमानी और अल्लामा सय्यिद सुलैमान नदवी रह0 2/307)

जिसको दुन्या का सब कुछ मिल सकता था उसने दुन्या का कुछ न लिया, जिसके पास सब कुछ आया उसने अल्लाह की राह में अल्लाह के बन्दों को सब दे दिया जो क़ैसर व किसरा की तरह आराम की ज़िन्दगी गुज़ार सकता था उसने फ़क़ीरी की ज़िन्दगी सजा ली थी।

रिवायात से सिद्ध है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अच्छा खाया भी है और अच्छा पहना भी है, दस्त का भुना हुआ गोश्त आपको पसन्द था, जब मिलता तो आप शौक से खाते, खुश्बू (सुगन्ध) का अत्यधिक प्रयोग करते, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 कहते हैं, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म को बहुत ही अच्छे कपड़ों में भी देखा है हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 ने एक बार बाजार से शामी जुब्बा खरीदा, घर आ कर देखा तो उसमें सुर्ख धारियां थीं, जाकर वापस कर आये, (इसलिए कि वह बहुत अच्छा जुब्बा न पहनना चाहते थे) किसी ने यह बात हज़रत अस्मा रज़ि0 से बयान की उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जुब्बा मंगवा कर लोगों को दिखाया, जिसकी जेबों, आस्तीनों और दामन पर दीबा (एक प्रकार का रेशमी कपड़ा) की पट्टी थी। (अबू दाऊद)।

बात यह नहीं है कि

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के हर अनुयायी के लिए फ़क़ीरी की जिन्दगी बिताना अनिवार्य है, स्पष्ट है अल्लाह ने जो अच्छी और हलाल चीजें अपने बन्दों के लिए बनाई हैं उनको अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने हराम नहीं किया। इसका वास्तविक अर्थ यह है कि राहे हक़ पर (सत्यमार्ग पर) चलने का फैसला, आखिरत को अपनाने और उसको प्राथमिकता देने का फैसला है, उसके बाद कम से कम उम्मत के वह लोग जो सारी दुन्या को अल्लाह की ओर लाने का उद्देश्य ले कर खड़े होते हैं, उनके मन को तथा उनके जीवन को दुन्या बनाने की ऐसी चिन्ता से खाली होना चाहिए जिस दुन्या से आखिरत (अगले जीवन) की हानि हो, अर्थात इस संसार में विकास के प्रयास में जिन बातों से सांसारिक लोगों को सुख मिलता है परन्तु वह आखिरत को भुला बैठते हैं ऐसी दुन्यादारी से दीनदारों के मन खाली होने चाहिए।

अतएव शिक्षा दी गई है कि देखो तुम्हारी निगाहें भटकने न पायें और ऐसा न हो कि वह लोग जिनकी सारी खुशहाली इसी संसार तक सीमित है उनको लल्चाई निगाहों से देखें, उनके मूल्यवान पत्थरों से बने भवन, अच्छी सुन्दर वाटिकाएं, उनके घरों के बहुमूल्य कालीनों, शान्दार सोफे और फर्नीचर, उन के एयर कन्डीशन उनके ऊँचे बैंक बैलेंस, उनमें से कोई चीज़ तुम्हारे लिए हराम नहीं, लेकिन उनमें से कोई चीज तुम्हारा लक्ष्य नहीं, उनमें से जो चीज़ भी अल्लाह की ओर बुलाने में रुकावट बने, वह तुम्हारे लिए जाइज़ नहीं, इनसे बचना ही अच्छा है, पवित्र कुर्आन में है "और उसकी ओर आंख उठाकर न देखो, जो कुछ हमने उनमें से विभिन्न लोगों को उपयोग के लिए दे रखा है, ताकि हम उसके द्वारा उन्हें आज़माएं। वह तो बस सांसारिक जीवन की शोभा है। तुम्हारे रब की रोज़ी उत्तम भी है और स्थाई भी।"

(सूरः ताहा–131)

❖❖❖

भारत..... की जय.....

कलिमे कैसे बोल सकते हैं जब कि अल्लाह तआला ने बज़ाहिर अपने रसूल को मुख़ातिब करके, मगर हक़ीक़त में हर मुसलमान से यह फरमा दिया कि इल्म आ जाने के बावजूद फिर भी अगर तुम उन (मुशरिकों) की इच्छाओं के पीछे लगोगे तो निःसन्देह तुम ज़ालिमों (नाफ़रमानों) में से हो जाओगे।

(सूरः बक़रा–145)

ग़ौर करें और तौबा करें हमारे वे मुसलमान भाई जो केवल दुन्या वालों की खुशनूदी हासिल करने के लिए फ़ख़रिया अन्दाज़ में एक नहीं हज़ार बार "भारत माता की जय" बोलने को तैयार हैं। और अल्लाह के रसूल और कुरआन पर ईमान के बावजूद अर्थात इल्म होने के बावजूद कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन की इच्छाओं के अनुसार अमल करने में कोई हरज नहीं समझते।

❖❖❖

चील: तेज़ निगाहों वाला शिकारी

—डॉ0 मुहम्मद अहमद

चील शिकार की तलाश में बड़े क्षेत्रों पर लंबे समय तक ऊपर उड़ने में सक्षम है। एक बार शिकार नज़र आ जाए, तो यह उस पर अचानक झपट्टा मार लेता है। शिकार करने के लिए चील इतनी रफ़्तार और ताक़त के साथ नीचे आता है कि शिकार के पास बचने का रास्ता ही नहीं होता। यह तकनीक इस पक्षी को अपने से बड़े जीव का शिकार करने में मदद करती है। दुन्या में शायद ही कोई ऐसा अन्य शिकारी होगा, जो इतनी विविध परिस्थितियों में शिकार करने में सक्षम है जैसे खुली चरागाहों में हिरण, जंगल में पेड़ों पर बैंठे बंदर, चट्टान पर बैठे रॉक हाइरैक्स और समुद्र में तैर रही मछली पर ऐसी कुछ ही जगहें होंगी, जो चील की नज़र से बच जाएं।

चील बाज़ परिवार से आने वाला एक पक्षी है। चील की चोंच हुकदार पंजे मुड़े हुए (जिन्हें टैलून्स कहते हैं) नज़र बेहद पैनी, पंख ताक़तवर, शरीर मज़बूत और पैर पंखों से ढके हुए होते हैं। उनकी दृष्टि असाधारण रूप से बहुत तेज़ होती है और यह पक्षी बेहद लंबी दूरी से संभावित शिकार को देखने की क्षमता रखता है। रोम के निवासियों का मानना था कि यह ज्यूपिटर का प्रिय पक्षी है और इसलिए यह रोमन साम्राज्य का राष्ट्रीय चिह्न बन गया। अमेरिकी भारतीयों की मान्यता के अनुसार एक पौराणिक पक्षी थंडरबर्ड ही तूफ़ान और बिजली के कड़कने के लिए ज़िम्मेदार होता है। इसलिए उन्होंने चील को थंडरबर्ड के प्रतीक के तौर पर इस्तेमाल किया।

अमेरिका ने अपने चिह्न के तौर पर बाल्ड ईगल (हैलियाईट्स ल्यूकोसिफैलस) को चुना है क्योंकि यह पक्षी लंबे जीवन, असीम ताक़त और राजसी दिखावट के लिए मशहूर है। ज़ार के शासन के दौरान रूस ने भी इस पक्षी को अपने राष्ट्रीय चिह्न के तौर पर इस्तेमाल किया था। इसी पक्षी को अल्बानिया, आस्ट्रीय, इक्वाडोर, जर्मनी मैक्सिको, पोलैंड और स्पेन में या तो राष्ट्रीय ध्वजों पर जगह मिली है या फिर यह अनेक कोट ऑफ़ आर्म्स के चिह्न में मौजूद है। इसके साथ ही यह इलिनॉयस, इयोवा, मिशिगन, न्यूयार्क, नाथ डेकोटा, आरेगॉन, पैनसिल्वेनिया और उटाह के झंडों पर व अधिकारिक सील में भी दिखता है। यही नहीं यह कई एशियाई देश जैसे इंडोनेशिया, मंगोलिया और थाईलैंड का भी राष्ट्रीय चिह्न है।

चील विश्व के सबसे तेज़ शिकारी पक्षियों में से एक है। सबसे बड़े हार्पी ईगल (हार्पिया हार्पिजा) और फिलिपीन ईगल (पिथेकोफैगा जैफ़री) का वज़न 9 किलो ग्राम (20 पौंड) तक का हो सकता है।

शेष पृष्ठ .....39...पर...

भारतीय संविधान की रक्षा

—अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी

दुन्या में तो न्यारा है, भारत का संविधान।
हम सब को तो प्यारा है, भारत का संविधान।।

भारत तो अब स्वतंत्र है, प्रतंत्र नहीं है।
बुद्ध जीवियों की रचना, भारत का संविधान।।

प्रतंत्रता की बेड़ी में जकड़े थे हम सभी।
अंग्रेजों का भारत में, चलता था संविधान।।

आपस में फूट डालकर, हमको थे लड़ाते।
लड़ने व लड़ाने का, उनका था संवधिना।।

भारत में हवा चल रही, फितना फसाद की।
अब तोड़ने में लग गये, भारत का संविधान।।

सच्चा वह नागरिक नहीं है, अपने देश का।
तोड़े कोई अगर वह, भारत का संविधान।।

हल करो विवाद को कानून के तहत।
मस्जिद का हो, मन्दिर का हो, है सबका संविधान।।

रक्षक ही अगर भक्षक बन जायें देश में।
फिर तैश में आयेगा, ईश्वर का संविधान।।

हम देश के वासी हैं, रक्षा करें धन जन की।
जनहित में ही लिखा है, भारत का संविधान।।

सिद्दीक़ी है हितैषी, जनता का, देश हित का।
मत तोड़ो मेरे भाई, भारत का संविधान।।

पहले अपनी इस्लाह की फिक्र करें

—मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी

—हिन्दी लिपिः राशिदा नूरी

जो शख़्स हर वक़्त दूसरों की बुराईयों का राग अलापता रहता हो और खुद अपने उयूब की परवाह न करे, वह सबसे ज़ियादा तबाह हाल है, इसके बजाये अगर वह अपनी इस्लाह की फ़िक्र करले और अपने तर्ज़ अमल का जाइजा लेकर अपनी बुराईयां दूर कर ले तो कम अज़ कम मुआशरे से एक फर्द की बुराई ख़त्म हो जायेगी और तजरिबा यह है कि मुआशरे में एक चराग़ से दूसरा चराग़ जलता है और एक फर्द की इस्लाह किसी दूसरे की इस्लाह का भी ज़रिआ बन जाता है, मुआशरा दर हक़ीक़त अफ़राद ही के मजमूअे से इबारत है और अगर अफराद में अपनी इस्लाह की फिक्र आम हो जाये तो धीरे–धीरे पूरा मुआशरा भी संवर सकता है लिहाज़ा मसले का हल ये नहीं है कि हम मुआशरे और उसकी बुराइयों को हर वक़्त कोस्ते ही रहें इससे न सिर्फ ये कि कोई मुफीद नतीजा बरामद होगा बल्कि बसा अवक़ात लोगों में मायूसी फैलती है, और बद अमली को फरोग़ मिलता है, इसके बजाये मसले का हल कुर्आन व सुन्नत के इरशादात की रौशनी में ये है कि हम में से हर शख़्स अपने हालात का जाइज़ा ले और अपने गिरेबान में मुंह डालने की आदत डाल कर ये देखे कि उसके ज़िम्मे अल्लाह और उसके बन्दों के क्या–क्या हुकूक़ व फराइज़ हैं? और क्या वह वाक़िअतन उन हुकूक़ व फ़राइज़ को ठीक–ठीक अदा कर रहा है, मुआशरे की जिन बुराईयों का शिकवा उसकी ज़बान पर है उनमें से किन–किन बुराईयों में वह खुद हिस्सेदार है? ◆◆

चील तेज़ निगाह .....

और उनके पंख 2.5 मीटर यानी 8 फुट तक फैल सकते हैं (चील के दो मुख्य समूह होते हैं) लैंड ईगल्स, जिनकी टांगों पर पंख होते हैं, जो अंगूठे तक फैले होते हैं, और सी ईगल्स या अर्न्स जिनकी टांगों के पंख अंगूठे के आधे हिस्से तक ही पहुंचते हैं। विश्व में चील की 80 से ज़ियादा प्रजातियां है। सबसे सामान्य प्रजाति होती है गोल्डन ईगल जो लैंड ईगल है और बाल्ड ईगल, जो सी ईगल है।

बाल्ड ईगल इकलौता चील है, जो सिर्फ उत्तरी अमेरिका में पाया जाता है। इसके विशिष्ट भूरे शरीर और सफ़ेद सिर और पूंछ के कारण इसे दूर से भी पहचाना जा सकता है। उड़ान के समय बाल्ड ईगल शायद ही अपने पंख फड़फड़ाती है बल्कि यह अपने पंख सीधे रखते हुए ही बेहद ऊँचाई तक पहुंचने में सक्षम है। इसके हुकदार चोंच, पैर और पंजे पीले रंग के होते हैं।

गोल्डन ईगल, उत्तरी गोलार्द्ध में सबसे प्रसिद्ध शिकारी पक्षी है। यह चील की सबसे ज़ियादा पाई जाने वाली प्रजाति में से है। इनके पंख भी बेहद लंबे होते हैं और पूंछ भी। ◆◆

उर्दू सीखये

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढये। —इदारा

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा
سارے جہاں سے اچھا ہندوستاں ہمارا
हम बुलबुले हैं इसकी यह गुलसितां हमारा
ہم بلبلے ہیں اسکی یہ گلستاں ہمارا
गुरबत में हों अगर हम रहता है दिल वतन में
غربت میں ہوں اگر ہم رہتا ہے دل وطن میں
समझो वहीं हमें भी दिल हो जहां हमारा
سمجھو وہیں ہمیں بھی دل ہو جہاں ہمارا
पर्वत वह सबसे ऊँचा हमसाया आस्मां का
پربت وہ سب سے اونچا ہمسایہ آسماں کا
वह संत्री हमारा वह पास्बां हमारा
وہ سنتری ہمارا وہ پاسباں ہمارا
गोदी में खेलती हैं उसकी हज़ारों नदियाँ
گودی میں کھیلتی ہیں اسکی ہزاروں ندیاں
गुलशन है जिनके दम से रश्के जिना हमारा
گلشن ہے جن کے دم سے رشک جناں ہمارا
ऐ आबेरूदे गंगा वह दिन है याद तुझ को
اے آبِ رودِ گنگا وہ دن ہے یاد تجھ کو
उतरा तेरे किनारे जब कारवां हमारा
اترا ترے کنارے جب کارواں ہمارا
मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
مذہب نہیں سکھاتا آپس میں بیر رکھنا
हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा
ہندی ہیں ہم وطن ہے ہندوستاں ہمارا
इक़्बाल कोई महरम अपना नहीं जहां में
اقبال کوئی محرم اپنا نہیں جہاں میں
मालूम क्या किसी को दर्दे निहां हमारा
معلوم کیا کسی کو دردِ نہاں ہمارا